राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उतराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रकाशित

सुरत–गुजरात,संस्करण रविवार 31 मार्च 2024 वर्ष–7,अंक–66 पृष्ठ–08 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

आज लोकतंत्र बचाओ रैली में मोदी सरकार के खिलाफ हुंकार भरेगा इंडिया गठबंधन

कांग्रेस नेता ने बताया सभी दल के नेता आ रहे

नई दिल्ली ।

लोकसभा चुनाव के लिए इंडिया गठबंधन की तीसरी रैली रविवार को दिल्ली के रामलीला मैदान में होने वाली है। इस बीच विपक्षी गठबंधन दलों के कुछ नेता जेल भेज दिए गए हैं। मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस को आए दिन इनकम टैक्स से नोटिस भेज रहा है। पार्टी के बैंक अकाउंट को कथित रूप से फ्रीज कर दिया गया है। अब पार्टी प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा कि बीजेपी तीन मनसूबों पर काम कर रही हैं और वे हैं, पार्टी के लिए चंदा, व्यापारियों को डंडा और ईडी का फंदा। कांग्रेस नेता रमेश ने बताया, कल की रैली व्यक्ति केंद्रित रैली नहीं है। यह इंडिया गठबंधन की रैली है। यह किसी एक पार्टी की रैली नहीं है। पहली रैली मुंबई के शिवाजी पार्क में हुई और दूसरी रैली दिल्ली के रामलीला मैदान में होने जा रही है। बंगाल में टीएमसी और कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग नहीं हुआ है, लेकिन जयराम ने बताया कि कल की रैली में तमाम लोग पहुंने वाले हैं। टीएमसी भी रैली में आएगी। कांग्रेस नेता रमेश ने बताया कि रैली का थीम लोकतंत्र बचाओ रखा गया है। रमेश ने कहा कि केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों के खिलाफ टैक्स टेररिज्म किया जा रहा है। खासतौर से कांग्रेस पार्टी को निशाना बनाया गया है।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार तक कांग्रेस को आईटी से चार नोटिस मिले थे, लेकिन कल रात को दो और नोटिस भेजे गए। उन्होंने कहा कि अभी तक केसरी जी के

जमाने तक के नोटिस आए हैं। विपक्षी दलों को लगातार टारगेट किया जा रहा है, जिसपर विपक्षी नेता चर्चा करने वाले हैं। दो सीएम को गिरफ्तार कर लिया गया है। कई अलग-अलग राज्यों में कई मंत्री गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर बोले- हमारा अगले 5 साल का रोडमैप तैयार है

लखनऊ । केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि मोदी सरकार को अगले 5 साल में क्या करना है इसका रोडमैप तैयार है। पहले घोटाले होते थे अब विकास होता है। वे शुक्रवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में विकसित भारत एंबेसडर सम्मेलन कार्यक्रम में शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पिछले 10 साल में भारत ने विकास यात्रा तय की है। अच्छी सरकार चुनने के लिए जागरूक मतदाता चाहिए। मोदी सरकार को पहले 100 दिन में क्या करना है और अगले 5 साल में क्या करना है इसका रोडमैप बना लिया गया है। मोदी सरकार अगले 25 साल में विकसित भारत कैसे बनाना है उसका रोड मैप भी बना चुकी है। उन्होंने कहा कि विपक्षी गठबंधन की हालत ऐसी है कि पंजाब में आम आदमी पार्टी को कांग्रेस देखने को राजी नहीं है। पश्चिम बंगाल में तालमेल नहीं है। उत्तर से राहुल गांधी की विदाई हो चुकी है। गठबंधन के सवाल पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि ये सब लोग दिखावे के लिए इकट्ठे हुए हैं।

आगरा से लखनऊ, मुंबई और बंगलूरू के लिए ही विमान सेवाएं जारी रहेंगी

आगरा । आगरा एयरपोर्ट अथॉरिटी के निदेशक नीरज श्रीवास्तव ने बताया कि आगरा से लखनऊ, मुंबई और बंगलूरू के लिए ही सेवाएं जारी रहेंगी। इसके पहले बताया गया था कि यहां से 3 शहरों के लिए हवाई यात्रा एक अप्रैल से बंद हो रही हैं। इसके लिए एयरक्राफ्ट की कमी बताई जा रही है। इसके चलते एक अप्रैल के बाद जयपुर, भोपाल और अहमदाबाद के लिए हवाई यात्रा सेवाएं अनिश्चतकालीन समय के लिए बंद हो जाएंगी। यहां से सिर्फ लखनऊ, मुंबई और बंगलूरू के लिए ही सेवाएं जारी रहेंगी।

लंदन में मनाया जा रहा राजस्थान का स्थापना दिवस समारोह

जयपुर। आज 30 जनवरी को लंदन में राजस्थान की परंपरागत और संस्कृतिक धाराओं का अद्भुत समारोह आयोजित किया जा रहा है। राजस्थान का 75 वां स्थापना समारोह में कुरजा संगीत से दो अंतरराष्ट्रीय गायक कार्यक्रम शामिल हो रहे हैं जिसमें डॉ. संजय मुकुंदगढ़ और नंदिनी शर्मा शामिल हैं। इसके अलावा, कार्यक्रम स्थल राजस्थानी आंतरिक सजावट थीम के साथ सजाया गया है है जिसमें भारतीय व्यंजन की दुकाने भी लगाई गईं हैं। स्वादिष्ट भोजन और पारंपरिक राजस्थानी उत्पादों को विशेष रुप से संजोया गया है। इसके अतिरिक्त, मेहमानों को राजस्थानी चंग और गींदड़ /गैर खेलने और राजस्थान से हमारे कलाकारों द्वारा गाये गानों पर नृत्य करने का मौका मिलेगा। साथ ही, बच्चों को शामिल करने के लिए विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रम होंगे। इस आयोजन में बच्चों को शामिल करने के लिए विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रम होंगे, जिसमें राजस्थानी क्विज और सबसे ऊर्जावान नृत्य प्रदर्शन के लिए पुरुष और महिला प्रतिभागियों को पुरस्कार मिलेगा। राजस्थानी छात्रों के शिक्षा में प्रोत्साहन के लिए एक महत्वपूर्ण कदम। हमारा लक्ष्य है कि हम इन प्रतिभाशाली छात्रों के लिए वो हर सुविधा मुहैया करा सके जिनकी वे एक आधुनिक शैक्षिक वातावरण में उन्नति हेतु जरुरत महसूस करते हैं। यूके में राजस्थान चैरिटेबल ट्रस्ट, यूके के द्वारा आयोजित यूरोप की सबसे बड़ी राजस्थानी इवेंट रंगीलो फागण की धूमधाम से तैयारी की है।

प्राकृतिक आपदा में केंद्र सरकार ने कोई विशेष राहत पैकेज नहीं दिया : सीएम सुखविंदर सिंह

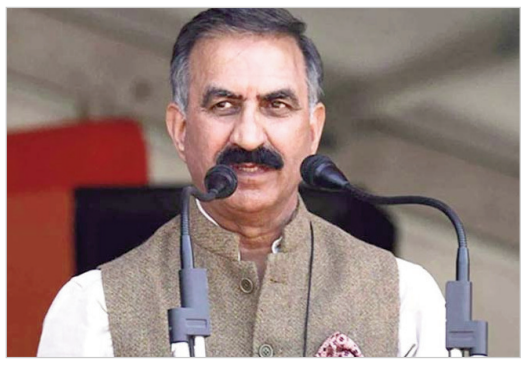

शिमला । हिमाचल प्रदेश के सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शुक्रवार को भाजपा की राज्य इकाई पर मानसून त्रासदी के बाद केंद्रीय सहायता रोकने और भीषणतम प्राकृतिक आपदा के दौरान राजनीति करने का आरोप लगाया। सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार ने वित्तीय तंगी के बावजूद अपने संसाधनों से 4 हजार 500 करोड़ रुपये के विशेष राहत पैकेज की घोषणा की थी और 25 हजार से अधिक परिवारों का पुनर्वास किया था। उन्होंने यहां जारी एक बयान में कहा कि केंद्र सरकार ने कोई विशेष राहत पैकेज नहीं दिया है और इससे भाजपा का राज्य विरोधी रुख उजागर हो गया है। सीएम सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार राज्य सरकार ने मानसून त्रासदी को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने के लिए प्रस्ताव पेश किया लेकिन भाजपा ने उसका विरोध किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा की कथनी और करनी अब जनता पहचान गई है।

राष्ट्रपति मुर्मू भाजपा के दिग्गज नेता आडवाणी को घर जाकर उन्हें करेंगी

भारत रत्न से सम्मानित

देश की चार महान हस्तियों को राष्ट्रपति भवन में किया सम्मानित

नई दिल्ली ।

राष्ट्रपति भवन में शनिवार को आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने देश की चार महान हस्तियों, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर, देश के पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव सहित चौधरी चरण सिंह और देश के प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किया। इन चारों विभूतियों को मरणोपरांत यह सम्मान दिया गया है। जबकि देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री और भाजपा के दिग्गज नेता लालकृष्ण आडवाणी को भी भारत रत्न सम्मान से सम्मानित किया जाना है। लेकिन अस्वस्थ होने के कारण वे शनिवार को राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके। बताया जा रहा है कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू रविवार, 31 मार्च को आडवाणी के घर जाकर उन्हें भारत रत्न से सम्मानित करेंगी। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति भी मौजूद रह सकते हैं। बता दें कि शनिवार को राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर को राष्ट्रपति मुर्मू ने देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से

सम्मानित किया। स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर के पुत्र रामनाथ ठाकुर ने यह सम्मान प्राप्त किया। देश के पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव को भी मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उनके पुत्र पीवी प्रभाकर राव ने यह सम्मान प्राप्त किया। वहीं पूर्व प्रधानमंत्री एवं किसानों के मसीहा माने जाने वाले चौधरी चरण सिंह को भी मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उनके पोते जयंत चौधरी ने यह सम्मान प्राप्त किया। देश के प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भी (मरणोपरांत) भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उनकी बेटी नित्या राव ने राष्ट्रपति मुर्मू से यह सम्मान प्राप्त किया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे सहित केंद्र सरकार के कई मंत्री एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में भाजपा ने बनाई इलेक्शन मेनिफेस्टो कमेटी

-निर्मला सीतारमण को संयोजक, पीयूष गोयल को सह संयोजक का जिम्मा

-कमेटी में मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज भी शामिल

नई दिल्ली।

लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने चुनाव घोषणा पत्र समिति का ऐलान कर दिया है। इसकी कमेटी की अध्यक्षता राजनाथ सिंह करेंगे। जबकि निर्मला सीतारमण समिति की संयोजक होंगी। पीयूष गोयल को सह संयोजक का जिम्मा दिया गया है। जानकारी के मुताबिक भाजपा की इस इलेक्शन मेनिफेस्टो कमेटी में कुल 27 सदस्य होंगे। कमेटी में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ ही पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान को भी शामिल किया गया है।भाजपा की चुनाव घोषणा-पत्र समिति में अर्जुन मुंडा, भूपेंद्र यादव, स्मृति ईरानी, अर्जुनराम मेघवाल, किरेन रिजिजू, अश्विनी वैष्णव, धर्मेंद्र प्रधान, भूपेंद्र पटेल, हिमंता बिस्वा सरमा, विष्णुदेव साय, रविशंकर प्रसाद, सुशील मोदी, केशव प्रसाद मौर्य, राजीव चंद्रशेखर, विनोद तावड़े, राधामोहन दास, ओपी धनखड़, अनिल एंटनी, तारीक मंसूर आदि शामिल हैं।

भारत में बाहर से जमकर आया पैसा

विदेशी मुद्रा भंडार पहुंचा 642.631 अरब डॉलर

नई दिल्ली।

विदेशियों को भारतीय बाजार खूब पसंद आ रहा है। लगातार पांचवे सप्ताह विदेशी मुद्रा भंडार में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई और अब भारत का विदेशी मुद्रा भंडार ऑल टाइम हाई लेवल पर पहुंच गया है। हाल ही में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 140 मिलियन डॉलर का इजाफा हुआ है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने जानकारी दी कि 22 मार्च तक भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 14 करोड़ डॉलर बढ़कर 642.631 अरब डॉलर की ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुंच गया है।

इससे एक सप्ताह पहले भी विदेशी मुद्रा भंडार में 6.396 अरब डॉलर की रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई है, जो 642.492 अरब डॉलर तक पहुंच गया था।

डॉलर के अलावा ये मुद्राएं भी बढ़ीं

हायर विदेशी पोर्टफोलिया इंवेस्टमेंट फ्लो उच्च भंडार के लिए प्रमुख सोर्स रहा है, जो भारतीय बाजारों में विदेशी निवेशकों के बढ़ते विश्वास का भी संकेत है। इस डाटा के मुताबिक विदेशी मुद्रा संपत्ति में 123 मिलियन डॉलर की कमी आई है, जो 568.264 अरब डॉलर पर पहुंच गई है।

विदेश मुद्रा भंडार के तहत पाउंड, यूरो और येन जैसी मुद्राएं भी शामिल हैं। आरबीआई ने बताया कि सप्ताह के दौरान गोल्ड रिजर्व में भी बढ़ोतरी हुई है, जो 347 मिलियन डॉलर बढकर 51.487 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। इसके अलावा स्पेशल ड्रॉविंग राइट्स 57 मिलियन डॉलर कम होकर 18.219 अरब डॉलर पहुंच गया है। सप्ताह के दौरान भारत में एफपीआई ने सबसे ज्यादा निवेश कैपिटल प्रोडक्ट्स, ऑटोमोबाइल, फाइनेंस, टेलीकॉम और रियल एस्टेट में किया है। जबकि आईटी सेक्टर में बिक्री की है।

सितंबर 2021 का टूटा रिकॉर्ड

गौरतलब है कि इससे पहले विदेशी मुद्रा भंडार सितंबर 2021 में सबसे ज्यादा था। इस समय भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 642.453 बिलियन डॉलर पर हो गया था।

फिर केंद्रीय बैंक द्वारा रुपये को गिरने से रोकने लिए इस मुद्रा का भारी मात्रा में उपयोग किया था, तब इसमें बड़ी गिरावट आई थी।

राहुल ने दी गारंटी बोले-

सरकार बदलने पर लोकतंत्र का चीर हरण करने वालों को सबक सिखाएंगे

नई दिल्ली।

कांग्रेस के फ्रीज हुए खाते और आयकर विभाग की विसंगतियों को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने काफी नाराजगी जाहिर की है।कांग्रेस ने आरोप लगाया कि आयकर विभाग ने भारतीय जनता पार्टी को लेकर आंखें बंद कर ली हैं, जबकि उस पर 4600 करोड़ रुपये का जुर्माना बनता है। पार्टी ने यह दावा भी किया कि लोकसभा चुनाव से पहले कर आतंकवाद के जरिये विपक्ष पर हमला किया जा रहा है। पार्टी को 1823 करोड़ रुपये के भुगतान के नोटिस जारी किए हैं। इसे लेकर कांग्रेस नेता आईटी डिपार्टमेंट पर काफी भड़के नजर आए। मुख्य विपक्षी दल के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान दिए एक बयान का वीडियो एक्स पर साझा किया। इसके साथ उन्होंने पोस्ट किया, 'जब सरकार बदलेगी तो लोकतंत्र का चीरहरण करने वालों पर कार्रवाई जरूर होगी। ऐसी कार्रवाई होगी कि दोबारा फिर किसी की हिम्मत नहीं होगी, ये सब करने की। यह मेरी गारंटी है।'कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, भाजपा की ओर से 42 करोड़ रुपये जमा करने के लिए 4,600 करोड़ रुपये के जुर्माने की अनदेखी की गई, जबकि कांग्रेस के विधायकों और सांसदों द्वारा 14 लाख नकद जमा करने के लिए 135 करोड़ रुपये के जुर्माने की मांग की गई है।मल्लिकार्जुन खरगे ने सवाल किया कि केवल विपक्ष के खिलाफ इस अनुचित तरीके से कार्रवाई करने के लिए आयकर विभाग पर कौन दबाव डाल रहा है? कांग्रेस अध्यक्ष ने दावा किया, 'मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को परेशान करने के लिए आयकर विभाग को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति क्यों दी जा रही है?

वे लोकतंत्र को नष्ट करने और संविधान को कमजोर करने के लिए आयकर विभाग, ईडी, सीबीआई जैसी संस्थाओं का दुरुपयोग कर रहे हैं। वहीं, कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने दावा किया कि केंद्र सरकार कांग्रेस को वित्तीय रूप से दिवालिया करने का प्रयास कर रही है।

भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सुपुर्द-ए-खाक हुआ माफिया मुख्तार अंसारी

परिवार के लोगों को ही मिट्टी देने की इजाजत

गाजीपुर।

माफिया मुख्तार अंसारी को गाजीपुर के मोहम्मदाबाद स्थित कालीबाग कब्रिस्तान में शनिवार को भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सुपुर्द-ए-खाक किया गया, प्रशासन के द्वारा सिर्फ परिवार के लोगों को ही मिट्टी देने की इजाजत दी गई। माफिया डॉन मुख्तार की गुरुवार को मौत हो गई थी। मौत का कारण कार्डियक अरेस्ट बताया गया है। मुख्तार की मौत के बाद गाजीपुर और मऊ सहित पूरे उत्तर प्रदेश में हाई अलर्ट है। पुलिस ने सभी जिलों में पहरा बढ़ा दिया है।

मुख्तार के जनाजे में शनिवार को समर्थकों की भारी भीड़ देखने को मिली। हालांकि बाहर से आए लोगों को कब्रिस्तान के अंदर नहीं जाने दिया गया। मौके पर डीएम सहित प्रशासन के आला अधिकारी मौजूद थे और लोगों को कब्रिस्तान के अंदर जाने से रोका गया।

हत्या, रंगदारी जैसे कई अपराधों में दोषी मुख्तार अंसारी का जन्म गाजीपुर जिले के मोहम्मदाबाद में हुआ था। मुख्तार के पिता सुबहानउल्लाह अंसारी और मां का नाम बेगम राबिया था। गाजीपुर में मुख्तार अंसारी के परिवार की पहचान एक राजनीतिक परिवार की है। 17 साल से ज्यादा वक्त से जेल में बंद रहे मुख्तार के दादा डॉक्टर मुख्तार अहमद अंसारी स्वतंत्रता सेनानी थे। गांधी जी के साथ काम करते हुए वह 1926-27 में कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। मुख्तार के नाना ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान को 1947 की लड़ाई में शहादत के लिए महावीर चक्र से नवाजा गया था।

इसके पहले माफिया अंसारी का जनाजा कब्रिस्तान पहुंचा। तब भीड़ को नियंत्रित करने के लिए मुख्तार के बेटे उमर अंसारी ने खुद हाथ में माइक ले ली और लोगों से पीछे हटने की अपील करते रहे, साथ ही यह सूचना देते रहे कि कब्रिस्तान के अंदर सिर्फ परिवार को जाने की अनुमति है।

हालांकि कुछ लोगों ने दीवार फांदने की कोशिश भी की। मुख्तार अंसारी की कब्र उनके पिता व मां की कब्र के समीप खोदी गई। सुरक्षा के लिहाज से कस्बे में चप्पे-चप्पे पर पुलिस के साथ ही अर्द्धसैनिक बल के जवानों की तैनाती रही। इससे पहले मुख्तार अंसारी का शव एंबुलेंस से भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच पहुंचा गाजीपुर पहुंचा। कब्रिस्तान के बाहर पुलिस का सख्त पहरा रहा। समर्थकों ने पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर जनाजे के लिए रास्ता बनाया।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संपादकीय

बढ़ता राजस्व

जीएसटी अर्थात वस्तु एवं सेवा कर संग्रह का लगातार बढ़ते जाना सुखद और स्वागतयोग्य है। वित्त वर्ष 2023-24 खत्म होने वाला है और संकेत मिलने लगे हैं कि देश में जीएसटी संग्रह लगभग 12 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि के साथ 20 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर जाएगा। इसमें कोई संदेह की बात नहीं कि देश में आर्थिक गतिविधियां बढ़ी हैं और तभी जीएसटी संग्रह में लगातार सुधार हो रहा है। प्रौद्योगिकी संचालित व्यवसायों में भी तेजी का आलम है। अधिकारियों ने यह भी संकेत दिया है कि 2023-24 की अवधि में जीएसटी उपकर के भी मजबूत संग्रह की उम्मीद है, इस घटक के तहत कुल राजस्व 1.45 लाख करोड़ रुपये होने की संभावना है। केंद्र सरकार ने राज्यों को मुआवजा देने के लिए जुटाए गए 2.69 लाख करोड़ रुपये के कर्ज को चुकाने के लिए विलासिता की वस्तुओं और ऑटोमोबाइल, शराब, सिगरेट आदि कई वस्तुओं पर जीएसटी उपकर को 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया है। कर और उपकर, दोनों के संग्रह में तेजी सूचक है कि अर्थव्यवस्था सुधार की राह पर है। गौर करने की बात है कि वित्त वर्ष 2019-20 में कुल जीएसटी संग्रह 10 लाख, 18 हजार करोड़ से ज्यादा रहा था। उसके बाद वित्त वर्ष 2020-21 में महामारी ने अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया और कर संग्रह दस लाख करोड़ रुपये के नीचे चला गया था। हालांकि, उसके बाद से जीएसटी संग्रह लगातार बढ़ रहा है। समाप्त होने जा रहे वित्त वर्ष में अगर फरवरी महीने तक के संग्रह को देखें, तो संग्रह करीब 17 लाख करोड़ रुपये के आसपास पहुंच गया है। चूंकि मार्च के महीने में बाकी महीनों की तुलना में कुछ ज्यादा संग्रह की संभावना रहती है, इसलिए अगर कुल संग्रह 20 लाख करोड़ रुपये के आसपास पहुंच जाए, तो किसी को अचरज नहीं होना चाहिए। पिछले वित्तीय वर्ष में जीएसटी संग्रह 18 लाख करोड़ रुपये से थोड़ा अधिक था। मार्च 2024 के लिए जीएसटी संग्रह के आंकड़े 1 अप्रैल को आने की उम्मीद है और अगर संग्रह रिकॉर्ड तोड़ हुआ, तो निश्चित ही इससे देश के आर्थिक परिवेश में नए उत्साह का संचार होगा। इस तथ्य को कोई भोला व्यक्ति भी समझ सकता है कि बेहतर कर संग्रह सकारात्मकता का सूचक है, जबकि कर संग्रह का घटना नकारात्मकता का सूचक। मगर बढ़ते कर संग्रह के बावजूद भारत में चुनौतियां कम नहीं हैं। अभी भी जरूरत से ज्यादा औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद ही एक व्यवसाय अपने पांव पसारना शुरू करता है, इसलिए देश में व्यवसाय को आसान बनाने की जरूरत है। हालांकि, एक सकारात्मक पहलू यह है कि चुनौतियों के बावजूद भारत में नई कंपनियों का उभरना थम नहीं रहा है। सरकार उदारता से ऋण दे रही है, शेयर बाजार में भी दुनिया भर से निवेश आ रहा है, इसके बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी क्षमता से कुछ कम ही गति से अग्रसर है। भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीयों को चेतावनी या नसीहत देने वाले भी कम नहीं हैं। इसकी एक बड़ी वजह देश पर बढ़ रहा ऋण भी है। जीएसटी संग्रह का सही लाभ तभी है, जब देश के सकल घरेलू उत्पाद में ऋण का अनुपात समय के साथ घटता चला जाए। हम अपने ही धन से विकास करने में सक्षम होते चले जाएं। अगर कर संग्रह भी बढ़े और ऋण भी, तो हमें उपचार सोचने पड़ेंगे। बढ़ता राजस्व तभी ज्यादा शोभा देता है, जब सबके हाथ में धन और काम होता है।

आज का राशीफल

मेष आय के नए स्त्रोत बनेंगे। जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। अपनों से पीड़ा मिल सकती है। नेत्र विकार की संभावना है। खानपान में संयम रखें। कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। ससुराल पक्ष से लाभ होगा।

वृषभ दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। भाई या पड़ोसी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। दूसरों से सहयोग लेने में आप सफल रहेंगे।

मिथुन आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। अनावश्यक व्यय का सामना करना पड़ेगा। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

कर्क व्यावसायिक योजना सफल होगी। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। किसी बहुमूल्य वस्तु के पाने की अभिलाषा पूरी होगी। अपनो से संबंधों में कटुता आयेगी। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

कन्या शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। संतान से पीड़ा मिल सकती है। किसी अभिन्न मित्र या रिश्तेदार का भरपूर सहयोग रहेगा। नए अनुबन्ध प्राप्त होंगे।

तुला आर्थिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। प्रणय संबंधों में कटुता आ सकती है। नेत्र विकार की संभावना है।

वृश्चिक रोजी रोजगार की दिशा में सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।

धनु पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। वाणी पर नियंत्रण रखें। धन हानि की संभावना है।

मकर दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। संतान के कारण चिंतित हो सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। क्रोध व भावुकता में लिया गया निर्णय कष्टकारी होगा।

कुम्भ जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। नौकरी पेशा व्यक्तियों के पद में उन्नति होने के योग हैं। वाद विवाद की स्थिति आपके हित में न होगी। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

मीन गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। प्रेम संबंध प्रगाढ़ होंगे। किसी रिश्तेदार के आगमन से मन प्रसन्न रहेगा।

भारत को पुनः विश्व गुरु बनाना ही संघ का मुख्य लक्ष्य

(लेखक/ -प्रहलाद सबनानी)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक नागपुर में दिनांक 15 से 17 मार्च 2024 को सम्पन्न हुई है। इस बैठक में पूरे देश से 1500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया और श्रीराम मंदिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ओर विषय पर एक प्रस्ताव भी पास किया गया।

जैसा कि सर्वविदित ही है कि गौरवशाली हिन्दू सनातन संस्कृति विश्व में सबसे पुरानी संस्कृति मानी जाती है और इसी हिंदू सनातन संस्कृति का अनुपालन करते हुए भारत का इतिहास वैभवशाली रह पाया है तथा हिंदू सनातन संस्कृति का विस्तार इंडोनेशिया तक एवं सुदूर अमेरिका तक रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि संघ एवं इसके स्वयंसेवक करते क्या हैं? इसके उत्तर में अक्सर यह जवाब दिया जाता है कि संघ को यदि समझना है तो आपको संघ की शाखा में आना होगा। संघ, मां भारती को एक बार पुनः विश्व में गौरवशाली स्थान दिलाने के पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गम्भीर प्रयास कर रहा है। इस पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लाखों की संख्या में स्वयंसेवक आज संघ के साथ जुड़ चुके हैं। आज भारत के 45,600 स्थानों पर संघ की 73,117 शाखाएं, 27,717 साप्ताहिक मिलन एवं 10,567 संघ मंडली लगाई जा रही हैं। इन शाखाओं, साप्ताहिक मिलनों एवं संघ मंडलियों में स्वयंसेवकों में राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव (राष्ट्र प्रथम) जागृत किया जाता है ताकि वे समाज में जाकर समाज की सज्जन शक्ति को साथ लेकर भारत में समाज परिवर्तन का कार्य दक्षतापूर्वक कर सकें। संघ की शाखा सामान्यतः 60 मिनट की लगती है एवं इसमें शारीरिक व्यायाम, योग, प्राणायाम, खेल, बौद्धिक एवं प्रार्थना शामिल रहती है। बौद्धिक में सनातन संस्कृति एवं भारत के गौरवशाली इतिहास की जानकारी के साथ साथ भारतीय संतो, महात्माओं एवं महापुरुषों की जानकारी प्रदान की जाती है।

समय के साथ साथ संघ ने अपनी कार्यप्रणाली में परिवर्तन भी किया है एवं कई नए आयाम एवं कार्य अपने साथ जोड़े हैं। जैसे समाज के किन किन क्षेत्रों में क्या क्या काम करना है यह संघ के स्वयंसेवकों को बहुत स्पष्ट रूप से सिखाया जाता है। संगठन श्रेणी के साथ ही संघ में जागरण श्रेणी भी कार्यरत है। संगठन श्रेणी में शाखाओं के विस्तार, इसे सुचारू रूप से चलाने सम्बंधी कार्य, स्वयसेवकों का प्रशिक्षण एवं गुणवत्ता विकास आदि कार्य शामिल रहते हैं जबकि जागरण श्रेणी में समाज में जाकर किन क्षेत्रों में जागरण करना है, का निर्धारण किया जाकर इस क्षेत्र में स्वयसेवकों द्वारा कार्य किया जाता है। जैसे वर्तमान में जागरण श्रेणी में शामिल कार्य हैं - सेवा, सम्पर्क एवं प्रचार सम्बंधी कार्य। इसके अलावा 6 गतिविधियां भी हैं जो स्वयसेवकों द्वारा समाज के सहयोग से चलाई जाती हैं। इनमे शामिल हैं - धर्म जागरण समन्वय, गौ सेवा, ग्राम विकास, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता एवं पर्यावरण संरक्षण।

22 जनवरी 2024 को अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर में श्रीराम लला के श्रीविग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व दिनांक 1 से 15 जनवरी 2024 तक श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र के आह्वान पर संघ के स्वयंसेवकों एवं समाज के विविध संस्थानों तथा संगठनों के कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया गया गृह सम्पर्क अभियान अभूतपूर्व सफल रहा था। देश के समस्त प्रांतों के 578,778 गांवों एवं 4727 नगरों के कुल 19.38 करोड़ से अधिक परिवारों से स्वयंसेवकों सहित 44.98 लाख से अधिक व्यक्तियों ने सम्पर्क किया था। यह भारतीय समाज में संघ की गहरी पहुंच और समाज में उसकी स्वीकार्यता को दर्शाता है।

संघ के 40 से अधिक अनुशांगिक संगठन भी भारत में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं, जो हिंदू सनातन संस्कृति एवं भारतीय परम्पराओं के आधार पर समाज में अपने कार्य को आगे बढ़ाते हैं। विश्व में वामपंथी विचारधारा के आधार पर चल रहे विभिन्न मजदूर संगठन अपने श्रमिक सदस्यों को संस्थान के केवल लाभ में हिस्सा लेने की प्रेरणा देते हैं और अपनी मजदूरी में वृद्धि के लिए अक्सर हड़ताल आदि का सहारा लेते हैं। उद्योग संस्थान में हड़ताल होने से न केवल उस विशेष उद्योग संस्थान का बल्कि देश की अर्थव्यवस्था का भी नुक्सान होता है।जबकि, भारतीय मजदूर संघ, जो कि संघ का ही एक अनुशांगिक संगठन है, अपने श्रमिक सदस्यों को हड़ताल करने के लिए निरुत्साहित करता है और उसका नारा है कि 'संस्थान के लिए करेंगे पूरा काम और काम के लेंगे पूरे दाम'। यह अंतर है वामपंथी विचारधारा और राष्ट्रीय विचारधारा के संगठनों में। इसी प्रकार संघ के अन्य अनुशांगिक संगठनों में शामिल हैं - (1) सेवा के क्षेत्र में कार्य करने वाले संगठन - आरोग्य भारती, राष्ट्रीय सेवा भारती, भारत विकास परिषद, राष्ट्रीय चिकित्सा संस्थान, आरोग्य भारती, सक्षम (दिव्यांग नागरिकों के लिए), दीन दयाल शोध संस्थान। (2) सामाजिक संगठन - विश्व हिंदू परिषद, वनवासी कल्याण आश्रम, जनजाति सुरक्षा मंच, क्रीड़ा भारती, राष्ट्रीय सेविका समिति। (3) शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले संगठन - विद्या भारती, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय शिक्षण मंडल, अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ, संस्कृत भारती, शिक्षा संस्कृत उत्थान न्यास। (4) आर्थिक क्षेत्र में कार्य करने वाले संगठन - भारतीय किसान संघ, लघु उद्योग भारती, भारतीय मजदूर संघ, स्वदेशी जागरण मंच, सहकार भारती, ग्राहक पंचायत। (5) वैचारिक समूह में कार्य करने वाले संगठन - प्रज्ञा प्रवाह, विज्ञान भारती, संस्कार भारती, इतिहास संकलन, साहित्य परिषद, अधिवक्ता परिषद। (6) सुरक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले संगठन - सीमा जागरण मंच, हिंदू जागरण मंच, अखिल भारतीय रक्षा परिषद। उक्त समस्त संगठनों को पूर्ण स्वायत्तता प्रदत्त है एवं संघ की ओर से किसी भी प्रकार का बंधन इन संगठनों पर नहीं रहता है। हां, इन संगठनों की कार्य प्रणाली को भारतीय संस्कारों के अनुरूप ढालना आवश्यक रहता है।

अपने आचरण, आचार विचार एवं कार्य पद्धति के आधार पर भारतीय मूल के नागरिक हिंदू सनातन संस्कृति के संवाहक के रूप में अन्य कई देशों में कार्यरत हैं एवं वहां निवास कर रहे हैं और इन देशों की अर्थव्यवस्था में अपने योगदान को दिनोदिन मजबूती प्रदान कर रहे हैं। इन देशों के विभिन्न क्षेत्रों यथा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि में भारतवंशियों के योगदान को इन देशों मूल नागरिकों ने पहचाना एवं स्वीकारा है। इसके चलते लाखों की संख्या में विदेशी मूल के नागरिक हिंदू सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित हुए हैं एवं अब ऐसा माना जाने लगा है कि हिंदू सनातन संस्कृति पूरे विश्व में भविष्य का विश्व धर्म होने जा रही है। अतः आज विश्व के 53 देशों में 卐हिंदू स्वयंसेवक संघ卐 की स्थापना की जा चुकी है एवं इन देशों में 1480 शाखाएं एवं 112 मिलन चलाए जा रहे हैं। हाल ही में आस्ट्रेलिया एवं अमेरिका के कई नगरों में संघ शिक्षा वर्ग आयोजित किए गए थे तथा इसी प्रकार विश्व के अन्य देशों को मिलाकर कुल 17 हिंदू हेरिटेज कैम्प भी आयोजित किए गए थे। अमेरिका में सेवा दीवाली बहुत धूमधाम से मनाई जाती है, इस शुभ मौके पर स्थानीय गरीब वर्ग को उपहार प्रदान किए जाते हैं।

पूरे विश्व में आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को विश्व का सबसे बड़ा संगठन माना जाता है जो पिछले 99 वर्षों से सतत रूप से हिंदू सनातन संस्कृति एवं भारतीय परम्पराओं तथा संस्कारों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए मां भारती की सेवा में अपने आप को समर्पित किए हुए है। आज समाज की सज्जन शक्ति संघ की विचारधारा के अनुरूप सोचने लगी है अतः विभिन्न श्रेणी विशेष के नागरिक यथा चिकित्सक, शिक्षक, प्रोफेसर, अभिभाषक, श्रमिक, सेवा निवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारी, युवा उद्यमी आदि बड़ी संख्या में संघ के साथ जुड़ रहे हैं एवं समाज परिवर्तन में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। आज भारत में विभिन्न मत पंथ को मानने वाले नागरिकों के बीच यदि आपस में भाईचारा स्थापित होता है तो निश्चित ही मां भारती को उसके पुराने वैभव को प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता है। यही संघ का मुख्य लक्ष्य भी है।

आबादी असंतुलन से उपजे संकट की आहट

जन्म दर की विसंगति/अखिलेश आर्यंदु

एक दौर था जब दुनिया के तमाम देश बढ़ती आबादी और संसाधनों के बेतहाशा दोहन और कम संसाधनों की वजह से परेशान थे। आज भी तमाम विकासशील देश बढ़ती आबादी से बढ़ रही समस्याओं और संसाधनों की कमी की वजह से परेशान हैं। दूसरी तरफ विकसित देशों में घटती जन्मदर से आर्थिक और सामाजिक ताने बाने पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। वर्ष 2022 के संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के मुताबिक पिछले दस वर्षों में एक करोड़ से ज्यादा आबादी वाले आठ देशों की आबादी कम हो गई है, जिनमें ज्यादातर देश यूरोप के हैं। जापान आबादी में आ रही गिरावट व बुजुर्गों की बढ़ती आबादी से परेशान है। इसका सामाजिक-आर्थिक हालात पर असर पड़ा है। अंतरराष्ट्रीय जनरल द लेंसेट में 20 मार्च 2024 को प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक भारत में लड़कियों की आबादी दर घटने के कारण सामाजिक ताने बाने पर असर पड़ रहा है। जीवन शैली में बदलाव की वजह से युवा शादियां विलम्ब से करने लगे हैं, जिसका असर बच्चों के पालन-पोषण, उनकी शिक्षा और सेहत पर पड़ता है। इससे सामाजिक ताना-बाना गड़बड़ा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक साल 1950 तक यानी 74 साल पहले भारत की प्रजनन दर जो 6.2 थी, 2021 साल आते-आते घट कर दो प्रतिशत से भी कम रह गई। अध्ययन व अनुमान के मुताबिक 2050 तक प्रजनन दर घट कर 1.29 और साल 2100 में घटते-घटते 1.04 तक पहुंच सकती है। गौरतलब है प्रजनन दर 2.1 को रिप्लेसमेंट लेवल कहा जाता है। यानी इस दर पर आबादी स्थिर रहती है और इससे कम होने पर घटने लगती है। युवाओं की आबादी घटने का मतलब वृद्धों की आबादी में वृद्धि। यानी श्रम शक्ति में कमी आना। यह किसी भी देश के लिए एक जोखिम की स्थिति हो सकती है। भारत को भी एक या दो दशक बाद श्रम शक्ति की कमी से समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। विकसित देशों में भी जन्म-मृत्यु दर में असंतुलन पैदा हो गया है। अध्ययन के मुताबिक 2030 तक स्पेन, दक्षिण कोरिया, रूस, सिंगापुर और जर्मनी की आबादी घटनी शुरू हो जाएगी। इसके अलावा भारत, नेपाल, श्रीलंका और म्यांमार की आबादी की रफ्तार भी थम सकती है। अभी हालत यह है कि कई विकसित देशों में बच्चों की जन्मदर बहुत तेजी से घट रही है। इसमें सिंगापुर और जापान प्रमुख हैं। सिंगापुर में बच्चों की जन्मदर 0.97 प्रतिशत है तो जापान में बच्चों की जन्मदर 0.6 है। कोरिया में प्रजनन दर 0.72 प्रतिशत है। इस तरह देखें तो जन्मदर उन देशों में सबसे कम है जो विकसित और खुशहाल माने जाते हैं। गौरतलब है जापान ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए युवाओं को इनाम दे रहा है। इसके बावजूद शादी करने वाले युवाओं की संख्या लगातार कम हो रही है। वर्ष 2023 में महज चार लाख युवाओं ने ही शादियां कीं। इसी तरह सिंगापुर में 2023 में 26,500 युवाओं ने

ही शादियां कीं। जन्मदर की यह कमी जापान और सिंगापुर की अर्थव्यवस्था पर सीधे असर डाल रही है। चीन, जो आबादी के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा देश है, की आबादी वर्ष 2100 तक आज के स्तर से आधी यानी 1.4 अरब से घट कर 77.1 करोड़ रह सकती है। लेकिन दुनिया के तमाम अविकसित देशों में आबादी घटने के बजाय लगातार बढ़ रही है। इनमें अफ्रीकी देशों के अलावा मध्यपूर्व के मुस्लिम देश भी शामिल हैं। वहीं जिन देशों में बच्चों की जन्मदर बहुत अधिक है, उन देशों को संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इसमें पीने के पानी, खाद्यान्न के अलावा दवाएं व रोजगार की कमी शामिल है। भारत में पिछले दस सालों में पानी, खाद्यान्न और रोजगार में कमी देखी जा रही है, लेकिन बूढ़े हो रहे लोगों की संख्या बढ़ रही है। वहीं भारत के पड़ोसी देशों से खासकर बांग्लादेश, म्यांमार से पलायन कर आए शर्णार्थियों की वजह से भी जनसंख्या घनत्व पर असर पड़ा है। भारत में स्थिर जनसंख्या के लक्ष्य को हासिल करना बहुत बड़ी चुनौती है। बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे तमाम राज्यों में बच्चों की जन्मदर काफी अधिक है। इन राज्यों में जनसंख्या घनत्व दूसरे राज्यों से अधिक है। इसी के साथ भारत में युवाओं की बहुत बड़ी आबादी बेरोजगार है।

इसलिए रोजगार की समस्या को प्राथमिकता के तौर पर हल करें। यूं तो बेरोजगारी की समस्या को हल करने के मद्देनजर सरकारों ने कई कदम उठाए हैं, लेकिन आज भी करोड़ों की तादाद में भारत के युवा बेरोजगार हैं। इसलिए गैर बराबरी की समस्या भारतीय समाज में तेजी से बढ़ी है। भारत एक विकसित देश बने, इसके लिए जरूरी है कि आबादी में संतुलन बनाया जाए।

विचार मंथन

दिल्ली की रावडी देवी बन सकती हैं सुनीता .....

..... लेखक राकेश अचल

भारतीय राजनीति में सत्ता के हस्तांतरण के अनेक रोचक उदाहरण हैं, लेकिन बिहार की श्रीमती रावडी देवी जैसा कोई नहीं।भारत में महिला मुख्यमंत्री होना बड़ी बात नहीं है लेकिन पति के उत्तराधिकार के रूप में मुख्यमंत्री होना एक इतिहास है। भारत के राजनीतिक इतिहास में हमेशा अनूठा रचने वाले बिहार में 1997 में तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाला में सजा बतौर जेल जाना पड़ा तो उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती रावडी देवी को ही मुख्यमंत्री बना दिया था। अब यही हालात कमोवेश दिल्ली में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की शराब घोटाले में गिरफ्तारी के बाद बन रहे है। अटकलें लगाईं जा रहीं हैं कि यदि केजरीवाल को जमानत न मिली और यदि उन्हें अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा तो श्रीमती सुनीता केजरीवाल को दिल्ली की रावडी देवी बनाया जा सकता है। कहने को तो भारत की पहली मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी रह चुकी हैं ,उनके बाद देश के आधा दर्जन राज्यों में महिलाओं ने मुख्यमंत्री पद सम्हाला लेकिन रावडी देवी कोई दूसरा नहीं बन पाया। सुचेता जी 1963 से 1967 तक उत्तर प्रदेश देश की मुख्यमंत्री रही। उनके बाद ओडिशा में नंदिनी सत्पथी को एक साल के लिए [1972 - 1973] मुख्यमंत्री बनाया गया। उधर गोवा में श्रीमती शशिकला काकोदकर 1973 से 1979 तक मुख्यमंत्री रहीं। उनके पिता दयानद बंदोदकर भी मुख्यमंत्री रह चुके थे। असम में सैयद अनवरा तैमूर को कांग्रेस ने 1980 से 1981 की अवधि के लिए मुख्यमंत्री बनाया। तमिलनाडु में सुश्री जयललिता ने छह बार मुख्यमंत्री बनकर नया कीर्तिमान बनाया। हालांकि उनसे पहले श्रीमती जानकी रामचंद्रन भी एक महीने के लिए तमिलनाडु की पाली महिला मुख्यमंत्री बनाई गयी थीं । उत्तर प्रदेश में बसपा की मायावती ने पांच बार मुख्यमंत्री बनकर जय ललिता का मुकाबला करने की कोशिश की। श्रीमती राजकुमार भट्टल भी 1996 से 1997 के बीच पंजाब की पहली मुख्यमत्री बनी। देश को पहली रावडी देवी 1997 में बिहार की मुख्यमंत्री के रूप में मिलीं और वे 2005 तक मुख्यमंत्री रहीं। उन्हें ये पद अपने पति से उत्तराधिकार में मिला था। सुषमा स्वराज को भी 1998 में तीन माह के लिए दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला,लेकिन दिल्ली को पूर्णकालिक मुख्यमंत्री के रूप में श्रीमती शीला दीक्षित [1998 से 2013] ही मिलीं। वे लगातार दो बार दिल्ली की मुख्यमंत्री रही। श्रीमती शीला दीक्षित के बाद मप्र में 2003 में उमा भारती ,राजस्थान में बसुंधरा राजे और बंगाल में ममता बनर्जी ने मुख्यमंत्री का पद सम्हाला। जम्मू-कश्मीर में मेहबूबा मुफ्ती और गुजरात में ये सौभाग्य श्रीमती आनंदी बेन पटेल को मिला। लेकिन इनमें से कोई भी रावडी देवी की तरह मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया। कुछ सीधे अपने चेहरे के आधार पर चुनाव लड़कर मुख्यमंत्री बनीं और कुछ को राजनीतिक परिस्थितियों के तहत मजबूरी में मुख्यमंत्री बनाया गया। मौजूदा समय में दिल्ली में एक बार फिर ऐसी परिस्थितिया बन रहीं हैं की मौजूदा मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के स्थान पर उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता केजरीवाल को दिल्ली का मुख्यमंत्री बना दिया जाये। देश की पहली रावडी देवी एकदम घरेलू महिला थी।

उनकी शिक्षा भी सांकेतिक थीं। वे पहले कार्यकाल में तो गूंगी गुड़िया बनकर रहीं थीं ,लेकिन यदि श्रीमत सुनीता केजरीवाल दूसरी रावड़ी बनतीं हैं तो वे उच्च शिक्षित हैं। वे आईआरएस हैं।

सुनीता को 20 साल से ज्यादा सिविल सर्वि स का भी अनुभव है। सुनीता केजरीवाल ने जूलॉजी में मास्टर्स डिग्री हासि ल की हैवे 1993 बैच की आईआरएस आईआरएस अधिकारी सुनीता की पहली मुलाकात उस दौरान 1995 बैच के आईआरएस अधिकारी अरविंद केजरीवाल से भोपाल में हुई. दोनों ही एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मिले , बाद में इसी मुलाकात की परिणति शादी में बदल गई. इसके बाद जब अरविंद केजरीवाल ने साल 2006 में आईआरएस के पद से इस्तीफा दिया था तब भी सुनीता सिविल सर्विस में रहीं। इस समय वे अपने पति की गैरमौजूदगी में अघोषित रूप से दिल्ली की सरकार चला रहीं हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

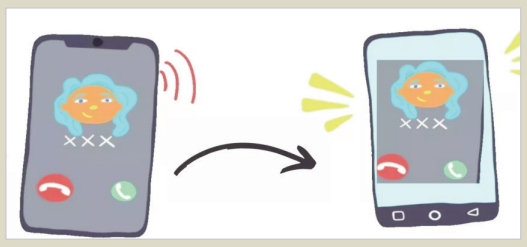

दूरसंचार कंपनियां यूएसएसडी-आधारित कॉल फॉरवर्डिंग 15 अप्रैल से बंद करें: डीओटी

नई दिल्ली । दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने दूरसंचार कंपनियों से कहा है कि वे 15 अप्रैल से यूएसएसडी-आधारित कॉल फॉरवर्डिंग को बंद कर दें। एक आधिकारिक आदेश में यह भी कहा गया कि वैकल्पिक तरीके के जरिये इन सेवाओं को फिर से शुरू किया जा सकता है। मोबाइल फोन के जरिये होने वाली धोखाधड़ी और ऑनलाइन अपराधों पर रोक लगाने के लिए इस संबंध में एक आधिकारिक आदेश जारी किया गया है। मोबाइल ग्राहक अपने फोन स्क्रीन पर कोई भी सक्रिय कोड डायल करके यूएसएसडी सेवा का उपयोग करते हैं। इस सेवा का उपयोग ज्यादातर आईएमईआई नंबर और बाइल फोन शेष राशि समेत अन्य जानकारी पता लगाने के लिए किया जाता है। विभाग ने 28 मार्च के एक आदेश में कहा था कि उसके संज्ञान में आया है कि एसएसएसडी (अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेंट्री सर्विस डेटा) आधारित कॉल फॉरवर्डिंग सुविधा का दुरुपयोग कुछ अनुचित गतिविधियों के लिए किया जा रहा है। आदेश के मुताबिक इस संबंध में सक्षम प्राधिकारी ने यह फैसला किया है कि सभी मौजूदा यूएसएसडी-आधारित कॉल फॉरवर्डिंग सेवाओं को 15 अप्रैल, 2024 से अगली सूचना तक बंद कर दिया जाए। आदेश में कहा गया है कि सभी मौजूदा ग्राहक जिन्होंने यूएसएसडी-आधारित कॉल फॉरवर्डिंग सेवा सक्रिय की है, उन्हें वैकल्पिक तरीकों से फिर से कॉल फॉरवर्डिंग सेवाओं को सक्रिय करने के लिए कहा जा सकता है।

स्मॉलकैप और मिडकैप योजनाओं में लगाई जा सकती है कई तरह की रोक

- एमएफ न्या सियों ने बाजार निवेशकों के हितों की सुरक्षा के बताए उपाय

नई दिल्ली । निवेशकों के हितों की रक्षा के लिए बाजार में तेज गिरावट के दौरान स्मॉलकैप और मिडकैप योजनाओं में कई तरह की रोक लगाई जा सकती हैं। उनके यूनिट बिक्रय पर प्रतिबंध लगा सकती है, कर्मचारियों द्वारा निकासी की सीमा तय की जा सकती है। म्युचुअल फंड (एमएफ) न्यासियों ने हाल में पेश की गई निवेशक सुरक्षा नीतियों में ये उपाय बताए हैं। एमएफ न्यासियों ने स्मॉलकैप और मिडकैप योजनाओं के लिए नीतियां इस महीने की शुरुआत में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) से निर्देश मिलने के बाद तैयार की हैं। न्यासियों द्वारा तैयार की गई नीतियों में दो पहलुओं पर खास ध्यान दिया गया है। पहला निवेश की सीमा तय कर रकम का प्रवाह संभालना और दूसरा बाजार में गिरावट के समय सभी निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। निप्पॉन इंडिया एमएफ, डीएसपी एमएफ और क्रांट एमएफ जैसी कुछ योजनाओं में कहा गया है कि बोर्ड और न्यासियों से मंजूरी मिलने के बाद फंड कंपनियां सेबी के नियमों के हिसाब से निकासी पर अंकुश लगा सकती हैं। अन्य फंड कंपनियों ने भी कहा कि वे लागू मानकों के अनुसार निवेश की अचानक निकासी को संभालने के उपाय कर सकती हैं। हालांकि म्युचुअल फंडों के पास इस तरह के उपाय पहले से मौजूद हैं मगर पहली बार उन्होंने चुनिंदा योजनाओं के साथ इन्हें जोड़ा है।

ओयो की नजर 100 करोड़ के मुनाफे पर

नई दिल्ली । ट्रैवल टेक ब्रांड ओयो की मूल कंपनी ओरेवेल स्टेज वित्त वर्ष 2024 की चौथी तिमाही में कर के बाद लाभ (पीएटी) 100 करोड़ रुपये और वित्त वर्ष 2024 में 20 फीसदी राजस्व वृद्धि की उम्मीद कर रही है। इन आंकड़ों पर इस सप्ताह की शुरुआत में कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी और वरिष्ठ प्रबंधन के बीच आंतरिक समीक्षा बैठक के दौरान चर्चा की गई थी, जहां उन्होंने कंपनी की वृद्धि और लाभप्रदता की राह पर चर्चा की थी। सूत्र ने कहा` कि ओयो के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक में अग्रवाल ने कहा कि लाभ में यह तीन गुना वृद्धि निरंतर राजस्व वृद्धि और उपयोगकर्ताओं के बढ़े हुए विश्वास का परिणाम है। कंपनी ने कहा` कि यह आंतरिक चर्चा थी। हमारे पास आधिकारिक रूप से कहने के लिए कुछ नहीं है। मौजूदा वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही से मुनाफे में आने के बाद ओयो हर तिमाही में लाभ कमा रही है।

अबूधाबी मंदिर और अंडरवाटर मेट्रो बनाने वाली कंपनी ला रही आईपीओ

मुंबई ।

अगर आप आईपीओ में पैसा लगाकर बंपर कमाई करने की सोच रहे हैं, तब ये खबर आपके लिए बहुत जरुरी है। दरअसल देश का जानमाना शापूरजी पलौंजी ग्रुप की प्रमुख कंपनी एफकॉन्स इंफ्रास्ट्रक्चर बड़ा आईपीओ लाने वाली है। मामले से जुड़े सूत्रों ने बताया है कि यह एक दशक में सबसे बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर आईपीओ हो सकता है। इस आईपीओ के द्वारा कंपनी की 7,000 करोड़ रुपये जुटाने की तैयारी है। कंपनी ने बाजार नियामक सेबी के पास जरुरी दस्तावेज फाइल कर दिए हैं। एफकॉन्स इंफ्रास्ट्रक्चर शापूरजी पलौंजी ग्रुप की प्रमुख इंफ्रास्ट्रक्चर इंजीनियरिंग और कंस्ट्रक्शन फर्म है। इसके प्रोजेक्ट देश-विदेश में चल रहे हैं। इसी कंपनी को अबूधाबी मंदिर और कोलकाता अंडरवाटर मेट्रो बनाने का श्रेय जाता है। रिपोर्ट के अनुसार, 10 रुपये प्रति इक्विटी शेयर के अंकित मूल्य वाला आईपीओ 1,250 करोड़ रुपये के शेयरों के ताजा इश्यू और गोस्वामी इंफ्राटेक प्राइवेट की ओर से 5,750 करोड़ रुपये तक की बिक्री की पेशकश करता है। शेयर बाजार सूत्रों के मुताबिक, यह एक दशक का सबसे बड़ा इंफ्रा आईपीओ है। बात दें कि एफकॉन्स इंफ्रास्ट्रक्चर का इतिहास छह दशकों से ज्यादा पुराना है। यह दिग्गज कंस्ट्रक्शन कंपनियों में शुमार है। कंपनी के पास घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चुनौतीपूर्ण इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (ईपीसी) परियोजनाओं को पूरा करने का शानदार ट्रैक रिकॉर्ड है। देश की टॉप इंजीनियरिंग और कंस्ट्रक्शन कंपनियों में इसकी गिनती होती है। कंपनी ने एशिया, अफ्रीका और मिडिल ईस्ट के 25 से ज्यादा देशों में सफलतापूर्वक प्रोजेक्ट पूरे किए हैं। कंपनी ने 1959 से 350 से ज्यादा इंफ्रा प्रोजेक्ट पूरे किए हैं। मरीन, एलएनजी और मेट्रो रेल सेगमेंट में यह देश में लीडर है।

जी एंटरटेनमेंट ने प्रौद्योगिकी और नवोन्मेषण केंद्र के 50 फीसदी कर्मचारी निकाले

नई दिल्ली । जी एंटरटेनमेंट ने अपने बेंगलुरु स्थित प्रौद्योगिकी और नवोन्मेषण केंद्र (टीआईसी) में लगभग 50 प्रतिशत कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया है। कंपनी ने एक विशेष समिति के सुझाव के बाद यह फैसला लिया गया है। इस समिति ने कंपनी के विभिन्न कारोबारी क्षेत्रों का गंभीरता से आकलन किया था। जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड (जेईईएल) ने कहा कि प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) ने लागत दक्ष ढांचा बनाने के लिए टीआईसी के 50 प्रतिशत कर्मचारियों की छंटनी की है। टीआईसी प्रौद्योगिकी समाधान उपलब्ध कराता है। हालांकि, कंपनी ने इस कदम से प्रभावित कर्मचारियों की सटीक संख्या साझा नहीं की है, लेकिन जी एंटरटेनमेंट ने अपनी ताजा वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि केंद्र में 650 से अधिक इंजीनियर हैं, जो हमें डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में आगे बढ़ने में अद्वितीय बढ़त देते हैं। जी ने एक मासिक प्रबंधन परामर्श कार्यक्रम 3एम का गठन किया है। यह प्रदर्शन से जुड़े प्रमुख मोर्चों पर प्रबंधन टीम का मार्गदर्शन करता है। कंपनी ने कहा कि हाल ही में आयोजित 3एम कार्यक्रम के दौरान बोर्ड से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर कंपनी ने टीआईसी की संरचना में लगभग 50 प्रतिशत की कटौती की है और इसके काम के दायरे को सुव्यवस्थित किया है।

सेंसेक्स और निफ्टी में एक फीसदी तेजी रही

मुंबई ।

बीते सप्ताह वैश्विक बाजारों से मिलेजुले रुख, रुपये की विनिमय दर में गिरावट से धारणा प्रभावित होने के बावजूद बिजली, वाहन और धातु शेयरों में मांग मजबूत रहने से शेयर बाजार में एक फीसदी तेजी देखी गई। घरेलू शेयर बाजार सप्ताह के पहले दिन सोमवार को होली और आखिरी दिन शुक्रवार को गुडफाइडे का अवकाश होने की वजह से बंद रहे, जिससे इस सप्ताह शेयर बाजार में केवल तीन दिन ही कारोबार हुआ। बीते सप्ताह कम कारोबारी दिनों में से शेयर बाजार में एक दिन गिरावट और दो दिन तेजी देखी गई। होली के त्योहार की छुट्टी के बाद शेयर बाजार का कारोबार गिरावट के साथ शुरू हुआ। मंगलवार को बीएसई का सेंसेक्स 468 अंक की गिरावट के साथ 72,363 पर खुला और 361.64 अंक गिरकर 72,470.30 अंक पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी 149 अंकों की गिरावट के साथ 21,947 पर खुला और 92.05 अंक फिसलकर 22,004.70 अंक पर बंद हुआ। वैश्विक बाजारों से नकारात्मक संकेतों के बावजूद हैवीवेट रिलायंस इंडस्ट्रीज और वित्तीय शेयरों के मजबूत प्रदर्शन से भारतीय शेयर बाजार के बेंचमार्क इंडेक्स बुधवार को हरे निशान पर करोबार करते दिखे। भारतीय शेयर बाजार का प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स 500 अंकों की तेजी के साथ 72,976 पर खुला और 526.01 अंकों की मजबूती के साथ 72,996.31 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी 50 अंकों की तेजी के साथ 22,150 अंक पर खुला और 118.96 अंकों की बढ़त के साथ 22,123.65 के स्तर पर बंद हुआ। गुरुवार को सेंसेक्स 289.96 अंकों की मजबूती के साथ 73,286.27 के स्तर पर खुला और 655.04 (0.89 फीसदी) अंकों की बढ़त के साथ 73,651.35 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी 86.15 अंक उछलकर 22,209.80 पर खुला और 203.25 (0.92 फीसदी) अंक उछलकर 22,326.90 पर बंद हुआ।

इको इंडिया मोबिलिटी ने आईपीओ के लिए सेबी के पास दस्तावेज जमा किए

नई दिल्ली । इको (इंडिया) मोबिलिटी एंड हॉस्पिटैलिटी लिमिटेड ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के द्वारा से धन जुटाने के लिए पूंजी बाजार नियामक सेबी के पास शुरुआती दस्तावेज दाखिल किए हैं। दाखिल दस्तावेजों के अनुसार, आईपीओ पूरी तरह प्रवर्तकों- राजेश लूंबा और आदित्य लूम्बा द्वारा 1.8 करोड़ इक्विटी शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) पर आधारित होगा। इसमें किसी तरह के नए शेयर शामिल नहीं हैं। फिलहाल प्रवर्तक और प्रवर्तक समूह की इकाइयों के पास कंपनी की 100 प्रतिशत हिस्सेदारी है। चूंकि यह एक ओएफएस है तो आईपीओ से होने वाली कमाई का कोई अंश कंपनी को नहीं मिलेगा और यह राशि शेयर बेचने वाले प्रवर्तकों के पास जाएगी। कंपनी 25 वर्षों से अधिक समय से कॉरपोरेट ग्राहकों को चालक के साथ कार किराये (सीसीआर) पर दे रही है और कर्मचारी परिवहन सेवाएं (ईटीएस) प्रदान कर रही है। इसके बेड़े में किफायती से लेकर लक्जरी कारों तक 9,000 से अधिक वाहन हैं। यह विकलांग लोगों के लिए सामान ढुलाई के लिए विशेष प्रकार की वैन के अलावा लिमोजिन और विंटेज वाहन भी उपलब्ध कराती है।

सरकार ने गेहूं खरीद लक्ष्य पूरा कराने नियमों में किया बदलाव

- क्रय केंद्रों पर गेहूं की खरीदी होने तक व्यापारी व आटा मिल संचालक भंडारण नहीं कर सकेंगे

मिर्जापुर ।

सरकार की ओर से गेहूं की खरीद लक्ष्य को पूरा कराने के लिए नियमों में बदलाव किया गया है। क्रय केंद्रों पर गेहूं की खरीद हो जाने तक व्यापारी व आटा मिल के संचालक भंडारण नहीं कर सकेंगे।` नियमों को पालन नहीं करने पर लाइसेंस निरस्त कर दिया जाएगा। रबी विपणन वर्ष 2023-24 में गेहूं की खरीद लक्ष्य के मुकाबले महज 12 प्रतिशत हुई थी। इस वर्ष शासन लक्ष्य को पूरा कराने के लिए जुट गया है। ऐसे में ज्यादा से ज्यादा खरीद करने के लिए नियमों में बदलाव किए गए हैं। बता दें` कि बारिश नहीं होने की वजह से इस बार भी गेहूं की पैदावार प्रभावित हुई है। वहीं शासन की ओर से गेहूं का समर्थन मूल्य 2275 रुपये तय किया गया है। गेहूं खरीद शत-प्रतिशत कराने के लिए नियमों में बदलाव हुआ है। इससे व्यापारी खरीद नहीं कर सकेंगे। वहीं आटा मिल संचालक भी तय लक्ष्य से ज्यादा गेहूं का भंडारण नहीं कर सकेंगे। बीते दिनों इसको लेकर निर्देश भी जारी किया गया है। अे धिकारी ने बताया कि आटा मिल मालिक भी सिर्फ प्रसंस्करण प्रयोजन के लिए ही गेहूं की खरीद करेंगे। आटा मिल मालिक के द्वारा गोदाम पर गेहूं उतरवाने की स्थिति में लाईसेंस निलंबित कर दिया जाएगा। खरीद पूरा होने तक व्यापारी को खरीद और बिक्री करने की अनुमति नहीं रहेगी। मिर्जापुर जनपद में विपणन वर्ष 2023-24 में 83 क्रय केंद्रों पर 72 हजार टन गेहूं खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इसके मुकाबले महज 8732 टन गेहूं का खरीद हुआ था, जो लक्ष्य के मुकाबले महज 12.13 प्रतिशत था। 2250 किसानों ने गेहूं बिक्री की थी। 2024-25 में लक्ष्य को पूरा करने के लिए शासन- प्रशासन जुट गया है। इस बार बटाईदार

के गेहूं बिक्री को लेकर नियमों में ढील दी गई है। मिर्जापुर जिले के 115 क्रय केंद्रों पर एक मार्च से गेहूं की खरीद शुरू हो गई है। खाद्य विभाग के 19, पीसीएफ के 22, यूपीएसएस के 20, नैफेड के 12, पीसीयू के 23, एनसीसीएफ के 13, भारतीय खाद्य निगम के चार और मंडी समिति के दो क्रय केंद्र बनाए गए हैं। गेहूं की बिक्री के लिए अब तक 55 सौ से अधिक किसान पंजीयन करा चुके हैं लेकिन अभी तक एक भी किसान ने गेहूं की बिक्री नहीं की है। ऐसा माना जा रहा है कि अप्रैल के पहले सप्ताह से खरीद तेज होगी।

थोक-खुदरा विक्रेताओं, प्रसंस्करणकर्ताओं को गेहूं का भंडार घोषित करने का निर्देश

नई दिल्ली ।

गेहूं पर स्टॉक की सीमा खत्म होने के साथ हि सरकार ने थोक विक्रेताओं, खुदरा विक्रेताओं और प्रसंस्करणकर्ताओं को गेहूं का भंडार घोषित करने का निर्देश दिया। सरकार ने गेहूं की जमाखोरी रोकने और कीमतों पर लगाम लगाने के लिए यह निर्देश दिया। गेहूं पर स्टॉक सीमा पिछले साल 12 जून को लगाई गई थी। खाद्य सुरक्षा बनाए रखने और जमाखोरी तथा सट्टेबाजी रोकने के लिए 31 मार्च, 2024 तक यह सीमा लागू थी। ताजा निर्देश के तहत एक अप्रैल से सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में थोक विक्रेताओं, प्रसंस्करणकर्ताओं और बड़े खुदरा विक्रेताओं सहित खुदरा विक्रेताओं को एक पोर्टल पर अपने स्टॉक की जानकारी देनी होगी। इसके बाद उन्हें प्रत्येक शुक्रवार को स्टॉक की घोषणा करनी होगी। व्यापारियों को पहले ही इस पोर्टल पर चावल का स्टॉक घोषित करने के लिए कहा जा चुका है। खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने बयान में कहा कि वह कीमतों को नियं त्रित करने और घरेलू बाजार में उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए गेहूं और चावल के स्टॉक पर कड़ी नजर रख रहा है।

भारत की सबसे अमीर बच्ची बनी रणवीर कपूर की बेटी राहा

- रणबीर ने 250 करोड़ का बंगला अपनी 1.4 साल की बेटी के नाम किया

मुंबई ।

पिछले दिनों जब इंफोसिस के फाउंडर नारायण मूर्ति ने अपने 4 महीने के पोते को तोहफा दिया था तो उसे भारत का सबसे अमीर बच्चा बताया जा रहा था। नारायण मूर्ती ने अपने पोते को गिफ्ट में इंफोसिस के 15 लाख शेयर दिए थे जिसकी कीमत 240 करोड़ रुपये थी। हालांकि अब रणबीर कपूर ने अपनी बेटी राहा को गिफ्ट देकर ये रिकॉर्ड तोड़ दिया है। बॉलीवुड अे भिनेता रणबीर ने 250 करोड़ का बंगला अपनी 1.4 साल की बेटी के नाम कर दिया है। नीतू कपूर, आलिया भट्ट और रणबीर कपूर को अक्सर एक साथ बांद्रा में लगभग तैयार कृष्णा राज बंगले पर जाते देखा गया है। बॉलीवुड लाइफ की एक रिपोर्ट के मुताबिक मशहूर जोड़ी अपनी बेटी राहा कपूर के नाम पर 250 करोड़ रुपये की संपत्ति वाले बंगले का नाम रखेगी, जिससे वह बॉलीवुड की सबसे अमीर संतान बन जाएंगी। बता दें कि रणबीर की बेटी 1 साल 4 महीने की हो गई है। उसका जन्म 6 नवंबर 2022 को हुआ था। दिवंगत अभिनेता राज कपूर और उनकी पत्नी कृष्णा राज इस बंगले के मालिक थे। कपूर परिवार में इकलौता पोता होने के नाते रणबीर कपूर को यह पैतृक संपत्ति विरासत में मिली थी, जिसे अब उन्होंने अपनी बेटी को गिफ्ट

कर दिया है। बता दें कि भारत में पैतृक संपत्ति को टैक्स से बाहर रखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रणबीर और आलिया दोनों इस बंगले को बनाने के लिए अपनी मेहनत की कमाई बराबर निवेश कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो एक बार यह सब बन जाने के बाद इस घर की कीमत 250 करोड़ रुपए से अधिक होगी।

बिजली विशेषज्ञों ने आरआईएल और अदाणी समूह के बीच सहयोग की सराहना की

- आरआईएल ने मध्य प्रदेश में अदाणी समूह के बिजली संयंत्र में 26 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी

मुंबई ।

बिजली क्षेत्र के विशेषज्ञों ने मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) और गौतम अदाणी के अदाणी समूह के बीच सहयोग की सराहना की। आरआईएल ने मध्य प्रदेश में अदाणी समूह के बिजली संयंत्र में 26 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी है। उन्होंने कहा कि यह देश के बिजली क्षेत्र के प्रमुख अध्यायों में से एक है, विशेष रूप से इसकी 4,28,000 मेगावाट की स्थापित क्षमता और 2030 तक इसमें 5,00,000 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना को देखते हुए। बिजली क्षेत्र के विशेषज्ञों ने कहा कि इस क्षेत्र को उदार बनाने के लिए केंद्र और विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा प्रोत्साहन के मद्देनजर इस तरह के कई और सहयोग होंगे। सहयोग के अनुसार आरआईएल 50 करोड़ रुपये में अदाणी पावर की सहायक कंपनी महान एनर्जेन में 26 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदेगी और मध्य प्रदेश संयंत्र के लिए 500 मेगावाट बिजली खरीदेगी। अदाणी पावर के अनुसार मध्य प्रदेश में महान थर्मल पावर प्लांट की 600 मेगावाट क्षमता वाले एक संयंत्र को निर्धारित मानदंडों के अनुसार कैप्टिव यूनिट के रूप में नामित किया जाएगा। पूर्व बिजली सचिव आर.वी. शाही ने कहा` कि देश के दो सबसे बड़े समूहों के बीच सहयोग से न केवल ऐसे सहयोगों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि सहयोग के अन्य प्रयासों को भी प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे सफलता की और भी अधिक ऊंचाइयां हासिल होंगी। उन्होंने कहा कि विद्युत अधिनियम, 2003 के बाद जो हासिल किया गया है, वह उससे पहले के 50 वर्षों के दौरान हासिल उपलब्धियों से तीन गुना से ज्यादा है। यह नवीकरणीय ऊर्जा का युग है, जिसे बिजली उत्पादन के डी-लाइसेंसिंग से भी मदद मिली है, जिसने बिजली क्षेत्र में विकास को एक अलग स्तर पर पहुंचा दिया है। हम वर्ष 2032 तक आठ लाख मेगावाट से अधिक क्षमता हासिल करने के लिए तैयार हैं। 2032 के बाद अगले 10 वर्षों में पूरी क्षमता को दोगुना किया जा सकता है, जिससे क्षमता 1,500 गीगावॉट से अधिक हो जाएगी। यह जीडीपी को पांच लाख करोड़ डॉलर और उससे भी अधिक तक बढ़ाने की देश की विकास रणनीति के मूल में होगा।

म्युचुअल फंड निवेशकों को राहत, नहीं कराना पड़ेगी रीकेवायसी

- निवेशकों को नए मध्यस्थ से जुड़ने के लिए नई केवायसी कराना जरूरी, आखिरी तारीख 31 मार्च

नई दिल्ली ।

म्यूचुअल फंड निवेशकों को फिर से केवाईसी यानी री-केवायसी कराने के लिए राहत मिल गई है। अब आपको री-केवायसी नहीं कराना पड़ेगा। मगर केवायसी से ही संबंधित एक ऐसा जरूरी काम भी है जिसके लिए आपके पास महज दो दिन का वक्त बचा हुआ है। वित्त वर्ष 24 खत्म होने में सिर्फ दो दिन बचे हुए हैं और 31 मार्च को ही इसके लिए डेडलाइन है। केवायसी रजिस्ट्रेशन एजेंसियों में से एक सीडीएसएल वेंचर्स ने म्यूचुअल फंड वितरकों को सूचित किया है कि निवेशकों को अपने मौजूदा पोर्टफोलियो में लेनदेन जारी रखने के लिए फिर से केवाईसी करना जरूरी नहीं है। हालांकि, सीडीएसएल वेंचर्स की तरफ से भेजी गई सूचना में कहा गया कि इन निवेशकों को किसी भी नए मध्यस्थ के साथ जुड़ने के लिए मौजूदा फ्रेमवर्क के अनुसार नई केवायसी कराना होगा। इसका मतलब यह है कि म्यूचुअल फंड में आप अगर एक नया निवेश करते हैं तो आपको केवायसी कराना पड़ेगा, जो पहले से ही आपने निवेश किया है, उसके लिए फिर से केवायसी कराने की जरूरत नहीं है। जिन निवेशकों का केवायसी आधिकारिक तौर पर वैध दस्तावेजों का उपयोग करके नहीं किया गया है, उन्हें 31 मार्च, 2024 तक फिर से केवायसी करना होगा। अगर समय सीमा यानी डेडलाइन से पहले फिर से केवायसी न करा ली जाती तो निवेशकों को मौजूदा पोर्टफोलियो में सभी ट्रांजैक्शन्स ब्लॉक हो जाते। हालांकि अब निवेशकों को केवायसी दोबारा कराने की जरूरत नहीं है, फिर भी उन्हें केवायसी रिकॉर्ड के अनुसार अपने मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी को मान्य करना होगा। 28 मार्च को म्यूचुअल फंड वितरकों को भेजे गए एक ईमेल में सीडीएसएल वेंचर्स ने कहा कि अगर निवेशक ऐसा नहीं करते हैं तो 1 अप्रैल से उनके केवायसी को रोक दिया जाएगा।

देश के कई राज्यों में पेट्रोल-डीजल सस्ता, कहीं महंगा हुआ

- कच्चे तेल की कीमत 83 डॉलर प्रति बैरल से ज्यादा

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजारों में कच्चे तेल की कीमत 83 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर निकल गई है1 शुक्रवार को क्रूड 83.12 और ब्रेंट क्रूड 86.97 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। क्रूड में यह तेजी पेट्रोल और डीजल की कीमतों पर असर डाल सकती है। शे निवार को छत्तीसगढ़, एमपी और केरल समेत कुछ राज्यों में पेट्रोल की कीमतें 0.70 पैसे तक बढ़ी हैं, जबकि गुजरात, असम, बिहार और गोवा समेत कुछ राज्यों में ईंधन 0.50 पैसे तक सस्ता हुआ है। वहीं दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर है, मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.21 रुपये और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर है, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.94 रुपये और डीजल 90.76 रुपये प्रति लीटर है, चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर है। नोएडा में पेट्रोल 95.01 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.96 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्राम में पेट्रोल 94.90 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.05 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.24 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.4 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.41 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63

रुपये प्रति लीटर, जयपुर में पेट्रोल 104.88 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 105.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.04 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 94.69 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.76 रुपये प्रति लीटर है।

आईपीएल में सीएसके और दिल्ली कैपिटल्स में मुकाबला आज

विशाखापट्नम (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में रविवार को चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) और दिल्ली कैपिटल्स के बीच यहां मुकाबला होगा। इस मैच में भी सीएसके का पलड़ा भारी नजर आता है। वह अब तक अपने दोनो मैच जीती है, वहीं दिल्ली कैपिटल्स अपने शुरुआती दोनो ही मैच हारी है। आंकड़ों पर नजर डालें तो दिल्ली कैपिटल्स के अब तक सीएसके से चार मुकाबले हुए हैं और सभी में दिल्ली को हार का सामना करना पड़ा है। इन मुकाबलों में हालांकि कप्तान ऋषभ पंत टीम में नहीं थे।

ऐसे में दिल्ली को जीत दर्ज करने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। सीएसके अब तक इस टूर्नामेंट में हर क्षेत्र में बेहतर साबित हुई है। वहीं दिल्ली अब तक लय हासिल करने के लिए संघर्ष कर रही है। सीएसके की ओर से पिछले मैच में 'अनकैप्ड' समीर रिज्वी ने अंतिम ओवरों में काफी तेजी से खेला था। पहली ही आईपील पारी में पंजाब किंग्स के खिलाफ इस बल्लेबाज ने दो छक्के लगाये थे। वहीं दिल्ली के पास इस प्रकार के खिलाड़ियों की कमी है। इस मैच में दिल्ली कैपिटल्स आक्रामक सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ को शामिल कर सकती है क्योंकि हाल में समाप्त हुए रणजी ट्राफी सत्र में 902 रन जुटाकर सबसे ज्यादा रन जुटाने वाले रिकी भुई अब तक इस टूर्नामेंट में विफल रहे हैं। वहीं रणजी ट्राफी के दूसरे हिस्से के दौरान प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी करने वाले शॉ भले ही कोच रिकी पोंटिंग द्वारा तय किये गये फिटनेस मानकों को पूरा नहीं करते हों पर अनुभव के मामले में वह भुई से आगे हैं।

सलामी बल्लेबाज वॉर्नर भी अब पुरानी फॉर्म में नहीं दिखते जबकि कप्तान ऋषभ पंत को लय में आने में कुछ समय लगेगा। इसके अलावा मिचेल मार्श भी अब तक उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। ऐसे में पृथ्वी शॉ की मौजूदगी से ही दिल्ली की बल्लेबाजी को कुछ मजबूती मिलेगी जिसे मुस्तफिजुर रहमान, दीपक चाहर, माथिशा पाथिराना और रविंद्र जडेजा जैसे गेंदबाजी आक्रमण का सामना करना होगा। टीम को असली चुनौती

मुस्तफिजुर की गेंदों से मिलेगी।

अगर कप्तान नहीं खेल पाते हैं तो टीम में कोई और पावर हिटर नहीं है। शाई होप और ट्रिस्टन स्टब्स जमने में समय लेते हैं। टीम की गेंदबाजी भी कमजोर है। अक्षर पटेल को छोड़कर कोई भी अन्य गेंदबाज प्रति ओवर 7.50 से कम रन नहीं दे पाया है। एनरिच नोर्किया सही लाइन एवं लेंथ में गेंदबाजी नहीं कर सके जिससे टीम ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अंतिम पांच ओवरों में काफी रन लुटा दिये। इससे डीसी को तेज गेंदबाज ईशांत शर्मा की कमी महसूस हो रही है।

वहीं दूसरी ओर सीएसके लगातार जीत से उत्साहित है। उसके पास अच्छे बल्लेबाज और गेंदबाज हैं। टीम के साथ महेन्द्र सिंह धोनी जैसा अनुभवी खिलाड़ी है जो कप्तान रुतुराज गायकवाड़ की सहायता कर रहा है। कुल मिलाकर देखा जाये तो सीएसके के लिए ये मैच अधिक कठिन नहीं रहेगा।

टीम

दिल्ली कैपिटल्स- ऋषभ पंत (कप्तान), डेविड वार्नर, पृथ्वी शॉ, यश धुल, अभिषेक पोरेल, अक्षर पटेल, ललित यादव, मिशेल मार्श, प्रवीण दुबे, विक्की ओस्तवाल, एनरिक नोर्किया, कुलदीप यादव, जेक फ्रेजर-मैकगर्क, खलील अहमद, इशांत शर्मा, मुकेश कुमार, ट्रिस्टन स्टब्स, रिकी भुई, कुमार कुशाग्र, रसिख डार, झाय रिचर्डसन, सुमित कुमार, स्वास्तिक चिकारा और शाई होप।

चेन्नई सुपर किंग्स- रुतुराज गायकवाड़ (कप्तान), महेन्द्र सिंह धोनी (विकेटकीपर), मोइन अली, दीपक चाहर, तुषार देशपांडे, शिवम दुबे, राजवर्धन हैंगरकर, रवींद्र जडेजा, अजय मंडल, मुकेश चौधरी, अजिंक्य रहाणे, शेख रशीद, मिशेल सेंटनर, सिमरजीत सिंह, निशांत सिंधु, प्रशांत सोलंकी, महेश थीक्षाना, रचिन रवींद्र, शार्दुल ठाकुर, डेरिल मिशेल, समीर रिज़वी, मुस्तफिजुर रहमान, और अरवेल्ली अवनीश राव (विकेटकीपर)।

आईपीएल : वेंकटेश अय्यर ने लगाया सबसे लंबा छक्का

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेंकटेश अय्यर ने कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) की ओर से आईपीएल में सबसे लंबा छक्का लगाया है। वेंकटेश ने यह छक्का रॉयल चैलेंजर्स बंगलुरू (आरसीबी) के खिलाफ मैच में अपनी अर्धशतकीय पारी के दौरान लगाया। वेंकटेश ने इस मैच में 30 गेंदों पर ही 50 रन बना दिये। इस पारी में उन्होंने 3 चौके और 4 लंबे छक्के लगाये। वेंकटेश ने इस दौरान एक ऐसा छक्का लगाया जो सत्र का सबसे लंबा छक्का बन गया है। वेंकटेश ने सिराज पर छक्के और एक रन के साथ 29 गेंद में अर्धशतक पूरा किया। केकेआर की जीत में उनके इस छक्के की अहम भूमिका रही।

वेंकटेश ने मयंक डागर की गेंद को मिडविकेट के ऊपर उछाल दिया। इस दौरान 106 मीटर लंबे छक्के को देखकर सभी हैरान रह गये। इससे पहले इस सत्र में ईशान किशन ने सबसे लंबा छक्का लगाया था। मुंबई इंडियंस की ओर से खेलने वाले ईशान ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 103 मीटर लंबा छक्का लगाया। इस मैच में लक्ष्य का पीछा करने करते हुए केकेआर की ओर से सुनील नारायण और फिल सॉल्ट ने तेज शुरुआत की। सॉल्ट ने मोहम्मद सिराज के पहले ओवर में दो छक्कों और एक चौके से शुरुआत की जबकि नारायण ने तीसरे ओवर में अल्जारी जोसेफ पर दो छक्के लगाये।

शुरुआती मैचों में विफल रहे हैं आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी स्टार्क

बेंगलुरु (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क को इस बार कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) ने सबसे महंगी कीमत देकर नीलामी में खरीदा था पर वह अब तक असफल रहे हैं और एक भी विकेट नहीं ले पाये हैं।

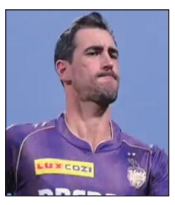

केकेआर ने स्टार्क पर आईपीएल इतिहास की सबसे बड़ी रकम 24.75 करोड़ रुपए की बोली लगायी थी। उसे उम्मीद थी कि स्टार्क के आने से उसकी गेंदबाजी बेहतर होगी पर अब तक ऐसा नजर नहीं आया है। शुरुआती मैचों में स्टार्क केकेआर की उम्मीदों को पूरा करते नहीं दिखे हैं। स्टार्क अब तक खेले दो मैच में एक भी विकेट नहीं ले पाये हैं। केकेआर ने हालांकि अपने दोनो मैचों को जीता है पर इसमें स्टार्क की भूमिका नहीं रही है। उसकी जीत में आंद्रे रसेल, हर्षित राणा, सुनील नरेन और फिल साल्ट की बड़ी भूमिका रही है। रसेल ने 2 मैच में 4 विकेट लेने के अलावा 64 रन भी बनाए हैं। हर्षित ने 5 विकेट लिए हैं। सुनील नरेन ने 49 रन बनाए हैं और 2 विकेट भी लिए हैं। वहीं फिल साल्ट ने सबसे ज्यादा 84 रन बनाये हैं।

वहीं केकेआर के टीम मैनेजमेंट को अब भी स्टार्क की क्षमताओं पर पूरा भरोसा भी है। केकेआर के गेंदबाजी कोच भरत अरुण ने कहा, 'स्टार्क के पास काफी अनुभव है। उन्हें पता है कि अच्छा प्रदर्शन करने के लिए क्या करना जरुरी होता है या हालातों से किस प्रकार से तालमेल बैठाया जा सकता है। हमें भरोसा है कि वह शीघ्र ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे।' स्टार्क दोनों मैचों में भी काफी महंगे साबित हुए हैं। स्टार्क ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 4 ओवर के अपने स्पेल में 53 रन दिये थे। वहीं आरसीबी के खिलाफ उन्होने 47 रन दिये थे। वहीं ऑस्ट्रेलिया के ही पैट कमिंस आईपीएल इतिहास के दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी हैं। सनराइजर्स ने कमिंस को 20.50 करोड़ रुपए में खरीदा था और वह उम्मीदों पर खरे उतरे हैं। कमिंस ने अब तक दो मैच में 8 ओवर गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट लिए हैं।

टी20 विश्व कप 2024 : अगले महीने हो सकता है भारतीय टीम का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले आगामी टी20 विश्व कप के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम के अप्रैल के अंतिम हफ्ते में चुने जाने की संभावना है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टीम सौंपने की अंतिम तारीख एक मई है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने शनिवार को यह जानकारी दी। लेकिन टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाली प्रत्येक टीम को 25 मई तक अपनी शुरूआती टीम में खिलड़ियों को बदलने का मौका मिलेगा।

बीसीसीआई के एक सीनियर सूत्र ने गोपनीयता की शर्त पर कहा, 'भारतीय टीम का चयन अप्रैल के अंतिम हफ्ते के दौरान किया जाएगा और इस समय तक इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का पहला हिस्सा खत्म हो जायेगा जिससे राष्ट्रीय चयन समिति दावेदारों की फॉर्म और फिटनेस का आकलन करने की स्थिति में होगी।' सूत्र ने कहा, 'क्रिकेटरों का पहला जत्था 19 मई को आईपीएल का लीग चरण खत्म होने के तुरंत बाद न्यूयॉर्क के लिए रवाना होगा। जिन खिलाड़ियों की टीम अंतिम चार के लिए क्वालीफाई नहीं करती हैं, वे भी जल्दी जायेंगे जैसा कि पिछले साल डब्ल्यूटीसी फाइनल्स के दौरान हुआ था।'

टी20 विश्व कप टूर्नामेंट अमेरिका और वेस्टइंडीज में हो रहा है तो उम्मीद है कि कुछ 'स्टैंड बाई' खिलाड़ी भी टीम के साथ यात्रा करेंगे ताकि मुख्य टीम के किसी भी खिलाड़ी के चोटिल होने की स्थिति में या फिर किसी भी अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण हटने से कोई 'लॉजिस्टिकल' परेशानी नहीं उठानी पड़े। चारों राष्ट्रीय चयनकर्ता ज्यादातर मैच देखने के लिए यात्रा करेंगे। पता चला है कि विश्व कप के लिए किसी भी दावेदार को कार्यभार प्रबंधन के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया गया है क्योंकि इन दो महीनों में वे फ्रेंचाइजी के अधीन खेलेंगे।

आरसीबी का आईपीएल जीतना असंभव : वॉन

बेंगलुरु। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने कहा है कि रॉयल चैलेंजर्स बंगलुरू (आरसीबी) ने अब तक आईपीएल 2024 में जिस प्रकार का प्रदर्शन किया है उसको देखते हुए उसका ट्रॉफी जीता असंभव है। वॉन ने कहा कि आरसीबी की गेंदबाजी इतनी कमजोर नजर आ रही है कि वह 182 रनों के लक्ष्य को भी नहीं बचा सकी। टीम को इस सत्र में लगातार दूसरी हार का सामना करना पड़ा है। केकेआर ने दूसरे मैच में आरसीबी को 7 विकेट से हराया। वहीं पहले मैच में उसे चेन्नई सुपरकिंग्स ने हराया।

केकेआर के खिलाफ आरसीबी के बल्लेबाजों ने 182 रन का बड़ा स्कोर बनाया पर उसके गेंदबाजों ने बेहद खराब प्रदर्शन किया जिससे हाथ आया मैच फिसल गया। केकेआर ने 19 गेंद बाकी रहते लक्ष्य हासिल कर लिया। आरसीबी के मुख्य तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज भी विकेट नहीं ले पाये। उन्होंने 3 ओवर में 46 रन दे दिये। वॉन के अनुसार इस प्रकार के प्रदर्शन से खिताब जीतने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। सिराज को कप्तान फाफ डुप्लेसी ने उन्हें 3 ओवर के बाद ही हटा लिया। वहीं यश दयाल को 1 विकेट मिला पर उन्होनें भी 46 रन लुटा दिये। अल्जारी जोसफ के दो ओवरों में ही 34 रन चले गये। इसी को लेकर वॉन ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'इस गेंदबाजी आक्रमण के साथ आरसीबी का खिताब जीतना असंभव है।' आरसीबी ने विराट कोहली के 83 रन की सहायता से 20 ओवर में 6 विकेट पर 182 रन बनाए थे। 183 रन के लक्ष्य को केकेआर की टीम ने आसानी से हासिल कर लिया।

पुराने मतभेद भूलकर मिले विराट और गंभीर

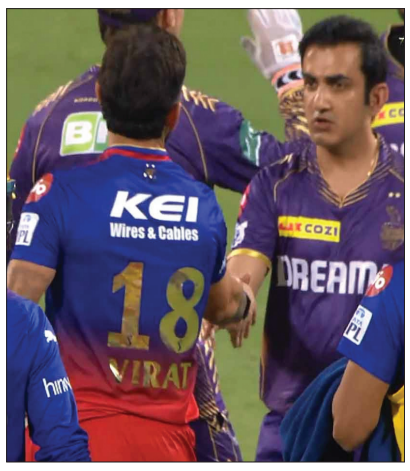

बेंगलुरु। यहां रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और नाइट राइडर्स (केकेआर) के बीच हुए मैच में आरसीबी के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली और केकेआर के मेंटोर गौतम गंभीर ने गले मिलकर पिछले मतभेदों को दूर किया। दोनो के बीच पिछले साल एक मैच के दौरान विवाद हो गया था। जिससे प्रशंसक भी निराश थे। इस बार प्रशंसकों को तब सुखद अहसास हुआ जब पिछली कड़वाहट भुलाकर दोनो गले मिले। केकेआर को इस मैच में सात विकेट से जीत मिली। इस मैच में विराट और गंभीर के चेहरे पर मुस्कुराहट थी जिससे देखकर प्रशंसक भी उत्साहित हो गये।

यह मामला उस समय का है जब पहली पारी के दूसरे रणनीतिक टाइमआउट के दौरान कोहली बल्लेबाजी कर रहे थे तो गंभीर मैदान से बाहर चले गए। दोनों ने एक-दूसरे से हाथ मिलाया और गले मिले, जिसने कई लोगों ने देखा और इन तस्वीरों के वायरल होने के बाद काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएं सामने आईं। तब कमेंट्री कर रहे रवि शास्त्री और सुनील गावस्कर भी इन दोनो दिग्गजों को गले मिलते देखकर खुश नजर आये। शास्त्री ने कहा, विराट कोहली और गौतम गंभीर के बीच इस गले मिलने के लिए केकेआर को फेयरप्ले पुरस्कार। वहीं गावस्कर ने भी तत्काल कहा, न केवल एक फेयरप्ले पुरस्कार, बल्कि एक ऑस्कर पुरस्कार भी।

आईपीएल : वेंकटेश और नारायण के शानदार प्रदर्शन से केकेआर ने आरसीबी को हराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेंकटेश अय्यर, सुनील नारायण और फिल सॉल्ट के अच्छे प्रदर्शन से कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने इंडियन प्रीमियर लीग में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) को सात विकेट से हरा दिया। इस मैच में जीत के लिए मिले 183 रन के लक्ष्य को आरसीबी ने 17 ओवरों में ही तीन विकेट पर 186 रन बनाकर आसानी से हासिल कर लिया। इस मैच में केकेआर की ओर से वेंकटेश ने 30 गेंद पर चार छक्के और तीन चौके लगाकर 50 रन बनाये। वहीं नारायण ने 22 गेंदों पर पांच छक्के और दो चौके लगाकर 47 रन बनाये। सॉल्ट ने 20 गेंद पर दो छक्के और दो चौके लगाकर 30 रन बनाये। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी ने कोहली की नाबाद 83 रन की पारी की सहायता से छह विकेट पर 182 रन बनाए। कोहली ने कैमरन ग्रीन 33 के साथ दूसरे विकेट के लिए 65 और ग्लेन मैक्सवेल 28 रनों के साथ तीसरे विकेट के लिए 42 रन बनाये। वहीं दिनेश कार्तिक ने अंत में आठ गेंद में तीन छक्कों की सहायता से 20 रन बनाए। इस मै में लक्ष्य का पीछा करते हुए केकेआर की ओर से नारायण और सॉल्ट ने तेज शुरुआत की।

केकेआर ने पावर प्ले में बिना विकेट खोए 85 रन बनाए जो इस सत्र में शुरुआती छह ओवर में किसी टीम का सबसे अधिक स्कोर है। वहीं मयंक डागर ने नारायण को आउट कर केकेआर को पहला झटका दिया। इसके बाद सॉल्ट भी कैच हो गये। केकेआर को अंतिम पांच ओवर में जीत के लिए सिर्फ 16 रन की जरुरत थी। इसपर वेंकटेश और रिंकू सिंह ने टीम को आसानी से लक्ष्य तक पहुंचा दिया। कोहली ने वेंकटेश के कैच के साथ ही आईपीएल में सबसे अधिक 109 कैच के सुरेश रैना के रिकॉर्ड की बराबरी की।

अय्यर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया।

आरसीबी की ओर से कोहली ने अच्छी शुरुआत की। कप्तान फाफ डुप्लेसी 08 रन बनाकर शुरुआत में ही आउट हो गये। वहीं अन्य बल्लेबाज भी बड़ी पारी नहीं खेल पाये। रजत पाटीदार भी तीन रनों पर ही आउट हो गये। केकेआर की ओर से आंद्रे रसेल और हर्षित ने दो-दो विकेट लिए।

गोवा में दो महिला फुटबॉलरों से हाथापाई, एआईएफएफ ने जांच के लिए बनाई समिति

नई दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने गोवा में दो महिला फुटबॉलरों के साथ कथित तौर पर हाथापाई करने वाले अपनी कार्यकारी समिति के सदस्य दीपक शर्मा को मामले की जांच पूरी होने तक खेल संबंधित गतिविधियों से दूर रहने के लिये कहा है। हिमाचल प्रदेश के खाड एफसी की दो फुटबॉलर भारतीय महिला फुटबॉल लीग सेकंड डिविजन में भाग ले रही थी। उन्होंने आरोप लगाया कि क्लब के मालिक शर्मा 28 मार्च की रात उनके कमरे में घुस आये और उनके साथ मारपीट की। उन्होंने एआईएफएफ की प्रतिस्पर्धा समिति और गोवा फुटबॉल संघ के सामने शिकायत भी दर्ज की है। इसके अलावा मापुसा पुलिस थाने में भी शिकायत दर्ज की गई है। सूत्रों के अनुसार शिकायत में दोनों ने कहा कि शर्मा अधिकतर समय नशे में रहते थे और उन्हें उनसे अपनी जान का खतरा है। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने एआईएफएफ को अधिकारी के खिलाफ तुरंत और कड़ी कार्रवाई करने के लिए कहा था। शर्मा हिमाचल प्रदेश फुटबॉल संघ के महासचिव, क्लब के मालिक और एआईएफएफ की कार्यकारी समिति के सदस्य हैं। जांच समिति में कार्यकारी समिति के सदस्य पिंकी बोंपाल मागर, एआईएफएफ की सुरक्षा और बाल संरक्षण अधिकारी रीटा जयरथ और विजय बाली हैं।

शाहीन अफरीदी पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड से निराश, छोड़ सकते हैं टी20 टीम की कप्तानी

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट और टी20 कप्तान के रूप में अपने भविष्य के बारे में चर्चा में शामिल नहीं होने से निराश तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी कप्तानी छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। शाहीन के करीबी सूत्र ने कहा कि गेंदबाज इस बात से नाराज हैं कि जहां तक कप्तानी या कोचों की नियुक्ति का सवाल है, पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी या राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने एक बार भी उनसे अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में बात नहीं की है।

सूत्र ने कहा, 'शाहीन का निराश होना उचित है क्योंकि राष्ट्रीय टी20 कप्तान होने के नाते उन्हें उम्मीद थी कि अगर बोर्ड/चयनकर्ता उन्हें हटाना भी चाहते हैं तो उन्हें इसके पीछे के कारणों के बारे में सूचित करने और उन्हें हर चीज के बारे में जानकारी देने की शालीनता होगी।' सूत्र ने कहा कि शाहीन इस बात से निराश हैं कि उन्हें लूप में नहीं रखा गया क्योंकि पीसीबी प्रमुख ने इस सप्ताह टी20 विश्व कप, कोचों की नियुक्ति और कप्तानी पर चर्चा के लिए राष्ट्रीय चयनकर्ताओं और बाबर आजम के साथ चर्चा की थी।

सूत्र ने कहा, 'शाहीन का मानना है कि अगर बोर्ड उन्हें हटाना चाहता है तो उन्हें पहले ही इसकी जानकारी दे देनी चाहिए थी क्योंकि वह खुद भी पद छोड़ने को तैयार हैं। दरअसल अब उनके कुछ करीबी लोगों ने उन्हें ऐसा करने और सभी से दूर जाने की सलाह दी है। बोर्ड द्वारा अराजकता और भ्रम पैदा किया जा रहा है।'

पिछले नवंबर में भारत में विश्व कप के बाद शाहीन को टी20 कप्तान बनाया गया था जब जका अशरफ पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के प्रमुख थे। शाहीन की नियुक्ति पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) में लाहौर कलंदर्स फ्रेंचाइजी को लगातार दो खिताब दिलाने की उनकी क्षमता के आधार पर की गई थी। लेकिन कप्तान बनाए जाने के बाद शाहीन न्यूजीलैंड में टी20 सीरीज 1-4 से हार गए और कलंदर्स के साथ भी अपना जादू नहीं दोहरा सके क्योंकि वे हाल ही में पीएसएल में तालिका में सबसे नीचे रहे।

यानिक सिनर और ग्रिगोर दिमित्रोव मियामी ओपन फाइनल में

मियामी गार्डन्स। दूसरे वरीय यानिक सिनर ने शुक्रवार को यहां तीसरी वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव पर जीत से मियामी ओपन के फाइनल में प्रवेश किया। रविवार को फाइनल में सिनर का सामना 11वें वरीय ग्रिगोर दिमित्रोव से होगा जिन्होंने चौथे वरीय एलेक्जैंडर ज्वेरेव को दूसरे सेमीफाइनल में शिकस्त दी। सिनर ने सेमीफाइनल में दमदार खेल दिखाते हुए मेदवेदेव को 6-1 6-2 से मात दी। दिमित्रोव ने शीर्ष वरीय कार्लोस अल्काराज को क्वार्टरफाइनल में हराने के बाद सेमीफाइनल में जर्मनी के ज्वेरेव को 6-4, 6-7, 6-4 से शिकस्त देकर फाइनल में जगह बनायी। महिला वर्ग का फाइनल शनिवार को अमेरिका की डेनियल कोलिंस और चौथी वरीय एलीना रिबाकिना के बीच खेला जायेगा।

साइना ने कांग्रेस नेता की महिला विरोधी टिप्पणी की निंदा की, सोशल मीडिया पर लिखी ये बात

बेंगलुरु (एजेंसी)। स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल ने दावणगेरे सीट से भाजपा उम्मीदवार गायत्री सिद्धेश्वर पर की गई महिला विरोधी टिप्पणी करने के लिए राज्य के अनुभवी कांग्रेस नेता शमनूर शिवशंकरप्पा की आलोचना की। दावणगेरे दक्षिण से 92 वर्षीय मौजूदा विधायक शिवशंकरप्पा ने कहा था कि पूर्व केंद्रीय मंत्री और मौजूदा सांसद सिद्धेश्वर जीएम की पत्नी गायत्री 'केवल रसोई में खाना बनाना जानती हैं'।

उनकी टिप्पणी पर आपत्ति जताते हुए नेहवाल ने अपने 'एक्स' पर पोस्ट किया, 'कर्नाटक के एक शीर्ष नेता शमनूर शिवशंकरप्पा जी ने कहा है कि महिलाओं को रसोई तक ही सीमित रहना चाहिए। दावणगेरे से उम्मीदवार गायत्री सिद्धेश्वरा पर की गई इस लैंगिक टिप्पणी की कम से कम ऐसी पार्टी से उम्मीद नहीं की जा सकती जो कहते हैं कि लड़की हूं, लड़ सकती हूं।'

लंदन ओलंपिक 2012 में कांस्य पदक जीतने वाली 34 वर्षीय नेहवाल ने कहा कि जब देश में महिलायें हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने की ख्वाहिश रखती हैं तो महिलाओं के खिलाफ इस तरह की द्वेषपूर्ण टिप्पणी परेशान करने वाली हैं। उन्होंने लिखा, 'जब मैंने खेल के मैदान पर भारत के लिए पदक जीते तो कांग्रेस पार्टी मुझसे क्या चाहती थी, मुझे क्या करना चाहिए था? इस तरह क्यों कहा जा रहा है, जब सभी लड़कियां और महिलाएं किसी भी क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल करने का सपना देखती हैं।'

नेहवाल ने लिखा, 'एक तरफ हम नारी शक्ति को वंदन कर रहे हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर के नेतृत्व में महिला आरक्षण विधेयक पारित किया गया है और दूसरी तरफ नारी शक्ति का अपमान और महिला विरोधी लोग। यह बहुत ही परेशान करने वाला है।' शिवशंकरप्पा ने हाल में कहा, 'वह (गायत्री) ठीक से बोलना भी नहीं जानती। वह घर पर खाना पकाने के लिए फिट है।'

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सातों महाद्वीपों में से सबसे ठंडा महाद्वीप अंटार्कटिका महाद्वीप है। वह सबसे दुर्गम तथा मानव-बस्तियों से सबसे दूर स्थित जगह भी है। वह साल के लगभग सभी महीनों में दुनिया के सबसे अधिक तूफानी समुद्रों और बर्फ के बड़े-बड़े तैरते पहाड़ों से घिरा रहता है। इसका कुल क्षेत्रफल 1.4 करोड़ वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से वह आस्ट्रेलिया से बड़ा है। अंटार्कटिका में बहुत कम बारिश होती है, इसलिए उसे ठंडा रेगिस्तान माना जाता है। वहां की औसत वार्षिक वृष्टि मात्र 200 मिलीमीटर है।

अंटार्कटिका
दुनिया का सबसे ठंडा महाद्वीप

सन 1774 में अंग्रेज अन्वेषक जेम्स कुक अंटार्कटिका वृत्त के दक्षिण में किसी भूभाग की खोज में निकल पड़ा। उसे बर्फ की एक विशाल दीवार मिली। उसने अनुमान लगाया कि इस दीवार के आगे जमीन होगी। उसका अनुमान सही था, वह अंटार्कटिका की दहलीज तक पहुंच गया था। पर स्वयं अंटार्कटिका पर पैर रखने के लिए मनुष्य को 75 साल और लगे। आर्कटिक (उत्तरी ध्रुव) और अंटार्कटिका (दक्षिणी ध्रुव) में काफी अंतर है। सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि अंटार्कटिका में आर्कटिक से छह गुणा अधिक बर्फ है। यह इसलिए क्योंकि अंटार्कटिका एक महाद्वीप है, जबकि आर्कटिक क्षेत्र मुख्यत: एक महासागर है। अंटार्कटिका की बर्फ की औसत मोटाई 1.6 किलोमीटर है। अंटार्कटिका महाद्वीप का अधिकांश भाग पर्वतों के उभरे हुए कंधों और चोटियों से बना हुआ है।अंटार्कटिका का मौसम बिरले ही पाले और बर्फीली हवाओं से मुक्त रहता है। इस महाद्वीप में शायद मात्र 2,000 वर्ग किलोमीटर खुली जमीन है। साल में केवल 20 ही दिन तापमान शून्य से ऊपर रहता है। पृथ्वी की सतह पर मापा गया सबसे कम तापमान भी अंटार्कटिका में ही मापा गया है। सोवियत रूस द्वारा स्थापित वोस्टोक नामक शोधशाला में 24 अगस्त 1960 को तापमान -88.3 डिग्री सेल्सियस मापा गया। अंटार्कटिका के बारे में सही ही कहा गया है कि वह पवनों की राजधानी है। कभी-कभी 320 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार वाली हवाएं चल पड़ती हैं, जो जमीन से मिट्टी के कणों को काट कर उड़ा ले जाती हैं। पूरे अंटार्कटिका महाद्वीप में मात्र 70 प्रकार की जीवधारियां खोजी गई हैं। इनमें से 44 कीड़े-मकोड़े हैं। सबसे बड़ा कीड़ा एक प्रकार का पंखहीन मच्छर है। जोंख, खटमल, मक्खी, जुए आदि भी वहां काफी संख्या में पाए जाते हैं। अंटार्कटिका में कोई स्थलीय स्तनधारी प्राणी नहीं है, पर बहुत से समुद्री स्तनधारी उसके तटों पर विश्राम करने आते हैं, या उसके आसपास के समुद्रों में आहार खोजते हैं। इनमें शामिल हैं कई प्रकार की व्हेलें और दक्षिणी ध्रुव के आसपास रहनेवाले पांच प्रकार के सील -केकड़ाभोजी सील, तेंदुआ सील, रोस सील, वेडेल सील और गजसील। रोस सील अत्यंत दुर्लभ प्राणी है, जबकि वेडेल सील तटों के नजदीक ही रहता है। सभी सीलों में बड़ा गजसील है। वह प्रजनन तो अंटार्कटिका के निकट के द्वीपों में करता है, लेकिन अंटार्कटिका के आसपास भोजन की तलाश करने आता है।

अंटार्कटिका के पास के समुद्रों में बिना दांतवाली व्हेलें काफी मात्रा में पाई जाती हैं। उन्हें एक समय मांस, चर्बी आदि के लिए बड़े पैमाने पर मारा जाता था। आज उनके शिकार पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगा हुआ है। अंटार्कटिका में पाए जानेवाले पक्षियों में शामिल हैं दक्षिण ध्रुवीय स्कुआ तथा अडेली और सम्राट पेंग्विन।

अंटार्कटिका में शाकाहारी प्राणी अत्यंत दुर्लभ हैं, कारण कि वनस्पति के नाम पर वहां शैवाल (लाइकेन), काई आदि आदिम पौधों की कुछ जातियां और केवल दो प्रकार के फूलधारी पौधे ही हैं। अंटार्कटिका इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वहां अनेक प्रकार के वैज्ञानिक प्रयोग किए जा सकते हैं। वैज्ञानिकों ने वहां पृथ्वी की चुंबकीय विशेषताओं, मौसम, सागरीय हलचलों, जीवों पर सौर विकिरण के प्रभाव तथा भूगर्भविज्ञान से संबंधित अनेक प्रयोग किए हैं।

भारत सहित अनेक देशों ने अंटार्कटिका में स्थायी वैज्ञानिक केंद्र स्थापित किए हैं। इन देशों में शामिल हैं चीन, ब्राजील, आर्जेन्टीना, कोरिया, पेरू, पोलैंड, उरूग्वे, इटली, स्वीडन, अमरीका, रूस आदि। भारत द्वारा स्थापित प्रथम पड़ाव का नाम था दक्षिण गंगोत्री। जब यह पड़ाव पानी के नीचे आ गया, तो मैत्री नामक दूसरा पड़ाव 1980 के दशक में स्थापित किया गया। सदियों से अंटार्कटिका प्रदूषण के खतरे से मुक्त था, पर अभी हाल में वैज्ञानिकों ने वहां की बर्फ में भी डीडीटी, प्लास्टिक, कागज आदि कचरे खोज निकाले हैं, जो वहां स्थापित वैज्ञानिक शिविरों से पैदा हुए हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि अंटार्कटिका में 900 से भी अधिक पदार्थों की महत्वपूर्ण खानें हैं। इनमें शामिल हैं सीसा, तांबा और यूरेनियम। अंटार्कटिका पर अभी किसी देश का दावा नहीं है, न ही विभिन्न देशों के कुछ वैज्ञानिक शिविरों के सिवा वहां कोई मानव बस्तियां ही हैं। पर क्या यह स्थिति हमेशा ऐसी बनी रह पाएगी? जैसे-जैसे मानव आबादी बढ़ती जाएगी, अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि महाद्वीपों के समान इसके उपनिवेशीकरण के लिए भी होड़ मच सकती है। यदि वहां किसी महत्वपूर्ण खनिज (जैसे, सोना, पेट्रोलियम, आदि) की बड़ी खानों का पता चले, तो भी उन पर अधिकार जमाने के लिए अनेक देश आगे आएंगे। पृथ्वी के गरमाने से अंटार्कटिका की काफी बर्फ पिघल सकती है, जिससे वहां काफी क्षेत्र बर्फ से मुक्त हो सकता है और मनुष्य के रहने लायक बन सकता है। इससे भी अंटार्कटिका में मनुष्यों का आना-जाना और बसना बढ़ सकता है। पर्यटन भी इसमें योगदान कर सकता है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकीय विकास होगा, ऐसे उपकरण उपबल्ध होने लगेंगे जो अंटार्कटिका जैसे अत्यंत ठंड वाले इलाकों में भी सामान्य जीवन बिताने को सुगम बनाए।

इसलिए 17वीं 18वीं सदी में श्वेत जातियों द्वारा अफ्रीका, द. अमरीका आदि में जो लूट-खसोट और विनाश लीला मचाई गई थी, उससे इस अनोखे परिवेश को बचाने और इस महाद्वीप के अधिक संतुलित और समस्त मानव-जाति के हित में उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 1959 में 12 देशों ने अंटार्कटिका संधि में हस्ताक्षर करके इस महाद्वीप को सैनिक गतिविधियों और खनन से मुक्त रखने का निर्णय लिया। अब इस संधि में 46 देशों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं, जिसमें भारत भी शामिल है।

दक्षिण ध्रुव की दुनिया

दोस्तो जरा सोचो, यूरोप और अमेरिका के उन इलाकों का क्या हाल होगा, जहां आये दिन बर्फीले तूफान आते हैं। इतना ही नहीं, दक्षिणी ध्रुव एक ऐसी जगह है, जहां पूरे साल बर्फ जमी रहती है। हाल ही में अंटार्कटिका को दुनिया की सबसे ठंडी जगह के रूप में दर्ज किया गया है...

बर्फ का रेगिस्तान

- दक्षिणी ध्रुव (साउथ पोल) पृथ्वी के सुदूर दक्षिणी हिस्से में स्थित है। यह स्थान अंटार्कटिका महाद्वीप में है।
- 9 हजार फीट से भी अधिक बर्फ की मोटी चादर यहां सालों भर बिछी रहती है। यही कारण है कि यहां उत्तरी ध्रुव (पृथ्वी के सुदूर उत्तर में) की अपेक्षा कई गुना ज्यादा ठंड पड़ती है।
- (-89.2) डिग्री होता है यहां का न्यूनतम औसत तापमान।
- यहां छह महीने का दिन और छह महीने की रात होती है। यहां वर्ष में एक बार सितंबर में सूर्योदय होता है, तो मार्च में सूर्यास्त।
- दक्षिणी ध्रुव का 2 प्रतिशत भाग चट्टानों और 90 प्रतिशत भाग बर्फ से बना है। चट्टानों पर काई (मॉस) और लाइकेन पाए जाते हैं। पेंगुइन यहां पाया जाने वाला प्रमुख जीव हैं।

पहला कदम

- 102 साल पहले 14 दिसंबर, 1911 को नार्वे के रोएल्ड एमुंडसन ने दक्षिणी ध्रुव पर कदम रखा था।
- इसके बाद जनवरी 1912 में ब्रिटेन के खोजी रॉबर्ट फाल्कन स्कॉट यहां पहुंचे तो, लेकिन बेहद खराब मौसम, भूख और विकसित कपड़े न होने के कारण लौटते समय रास्ते में ही उनकी मौत हो गई।
- 1928 में अमेरिकी नौसेनाध्यक्ष रिचर्ड एवलिन बायर्ड ने साउथ पोल की यात्रा हवाई जहाज से की।

रिसर्च स्टेशन

- दक्षिणी ध्रुव पर रिसर्च करने के लिए 1956-57 में अमेरिका ने सबसे पहला रिसर्च स्टेशन एमुंडसन-स्कॉट साउथ पोल स्टेशन की स्थापना की।
- 30 देश (अक्टूबर 2006 तक) यहां रिसर्च स्टेशन स्थापित कर चुके हैं।

भारतीय पहल

- एनएसएओआर (नेशनल सेंटर फॉर अंटार्कटिक ऐंड ओशन रिसर्च) (भू-विज्ञान मंत्रालय) के तहत भारत अंटार्कटिका आधारित अपना रिसर्च वर्क करता है। हर साल नवंबर-दिसंबर के महीने में भारत दक्षिणी ध्रुव के लिए अपना मिशन भेजता है।
- 1983 में यहां पहले भारतीय रिसर्च बेस दक्षिण गंगोत्री की स्थापना हुई। दक्षिणी ध्रुव की स्थिति बदलते रहने के कारण यह अब बर्फ के अंदर समा गया है।
- 1989 में दूसरा रिसर्च स्टेशन मैत्री स्थापित किया गया।
- 2012 में भारत का तीसरा रिसर्च स्टेशन भारती स्थापित हुआ।

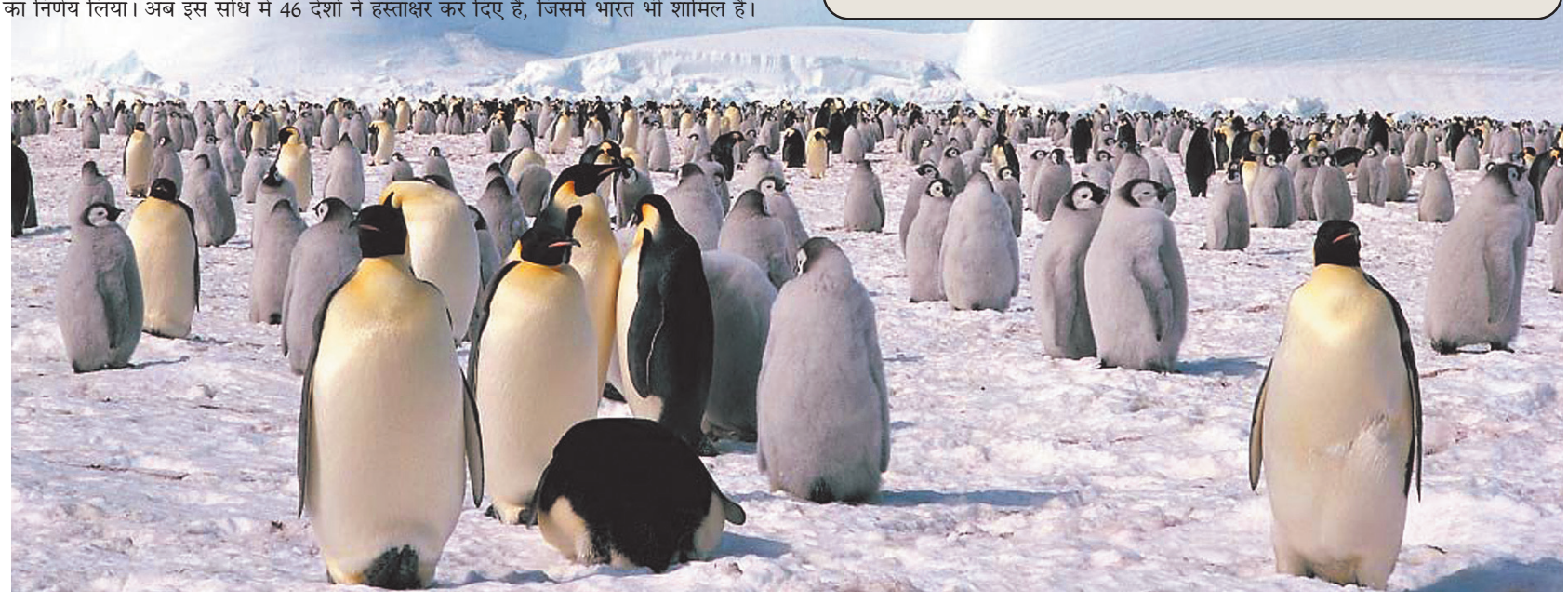

फ्लेमिंगो से सीखो
साथ निभाना

फ्लेमिंगो पानी में तैरने वाली ऐसी चिड़िया है, जो बहुत ही सामाजिक है। ये ज्यादातर झुंड में रहने में विश्वास करती हैं। इनके झुंड में हजार से भी ज्यादा फ्लेमिंगो एक साथ रहती हैं। अमेरिका में फ्लेमिंगो की चार प्रजातियां पाई जाती हैं, जबकि दो प्रजातियां विश्व के ज्यादातर जगहों पर पाई जाती हैं। फ्लेमिंगो एक पैर पर कई घंटों तक खड़ी रह सकती हैं। ये अपना दूसरा पैर अपने पंखों के बीच छिपा लेती हैं। हाल ही में हुए रिसर्च में यह बात सामने आई कि वे शायद ज्यादा से ज्यादा बॉडी हीट कंजर्व करने के लिए ऐसा करती हैं।

सामाजिक जीवनशैली

फ्लेमिंगो बहुत ही सामाजिक पक्षी है। इन्हें बड़े-बड़े झुंडों में रहना पसंद है। इनके झुंड बना कर रहने से ही ये शिकारियों से बच पाती हैं, साथ ही भोजन सामग्री बचाने और मिल-बांटकर खाने में इन्हें मजा आता है। झुंड में रहने से इन्हें घोंसला बनाने के लिए जगह ढूंढ़ने में भी सहायता मिलती है। हां, प्रजनन क्रिया से पहले झुंड को 15-20 के ग्रुप में बांट लेते हैं, ताकि सभी एक-दूसरे का अच्छे से खयाल रख सकें।

शैवाल खाना है पसंद

फ्लेमिंगो ब्लू-ग्रीन शैवाल खाना पसंद करती है। उनके चोंच इस तरह से बने होते हैं कि वह अपने भोजन से कीचड़ और कंकड़-पत्थर को अलग कर देती है। उनकी खुरदुरी जीभ भी उसे इस काम में बहुत मदद करती है।

खास बातें

प्रारंभ में इजिप्टियन कल्चर में फ्लेमिंगो को भगवान माना जाता था, सूर्य भगवान की तरह उनकी पूजा की जाती थी। फ्लेमिंगो की छह प्रजातियां होती हैं, जिसमें दो विश्व में हर जगह पाई जाती हैं। बाकी चार साउथ अमेरिका, मध्यपूर्व अफ्रीका और यूरोप में पाई जाती हैं।

वैसे तो ये तैरने वाली चिड़िया हैं, लेकिन ये तेज रफ्तार से उड़ने के लिए भी जानी जाती हैं। यह 35 मील प्रति घंटा की गति से उड़ सकती है।

फ्लेमिंगो साल में एक ही अंडा देती है, लेकिन उसकी देखभाल बहुत अच्छी तरह से करती हैं।

इनके पंख गुलाबी, लाल या नारंगी इसलिए होते हैं क्योंकि उनके भोजन में कैरोटीनॉयड पिगमेंट होता है।

इसका भोजन झींगा, शैवाल और प्लवक है।

फ्लेमिंगो के पैर पूरे शरीर से अधिक लंबे होते हैं। इनकी लंबाई 30-35 इंच होती है।

फ्लेमिंगो बच्चे की देखभाल 6 साल तक करते हैं।

फ्लेमिंगो सबसे ज्यादा जीने वाली चिड़िया है, उनकी उम्र 40 वर्ष तक होती है।

फ्लेमिंगो अपना घोंसला कीचड़ में बनाती हैं और वहीं अंडा देती हैं। नर-मादा दोनों मिल कर उसकी देखभाल करते हैं। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से अन्य जीवों की तरह फ्लेमिंगो भी प्रभावित हो रही हैं, क्योंकि वे रेनफॉल पर ही निर्भर करती हैं।

अनमोल धरोहर का केंद्र
लूव्र म्यूजियम

फ्रांस की राजधानी पेरिस में स्थित लूव्र म्यूजियम दुनिया के सबसे बड़े म्यूजिमों में एक है। 6,52,300 वर्गफीट में फैले म्यूजियम में 35,000 से ज्यादा ऐतिहासिक धरोहर मौजूद हैं। इस म्यूजियम में 600 ईपू से लेकर 19वीं शताब्दी तक की चीजें सहेजी गई हैं। कला के शौकीन लोगों और इतिहासकारों के लिए यहां देखने को बहुत कुछ है। मशहूर मोनालिसा की पेंटिंग भी इसी संग्रहालय में मौजूद है। ऐसे तो सिर्फ पेरिस शहर में नब्बे से भी अधिक छोटे-बड़े संग्रहालय हैं, पर लूव्र म्यूजियम की बात ही कुछ और है।

कहानी लूव्र की

लूव्र म्यूजियम की इमारत मूल रूप से एक मध्यकालीन किला थी। फिलिप अगस्त ने 1200 ई. में इसे बनवाया था। शुरुआत में इस किले का नाम लुपारा था जिसे बाद में बदलकर लूव्र कर दिया गया। चार्ल्स पंचम ने 14वीं सदी में लूव्र को एक शाही महल में बदल दिया। फ्रांस में हुए विभिन्न युद्धों के दौरान यह लगभग 150 साल तक उपेक्षित रही। पेरिस में जब योद्धा वापस आए, तो इस किले के रिइनोवेशन का काम किया गया। 1739 में इसे पूर्णत: म्यूजियम का रूप दिया गया। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान इस म्यूजियम को पहचान मिली।

खजाने में है बहुत कुछ

लूव्र म्यूजियम बहुत बड़ी है, इसलिए इसे कई हिस्सों में बांटा गया है। ओरिएंटल पुरावशेषों को देखने के लिए ही अच्छा खासा समय लग जाता है। मिश्र की प्राचीन सभ्यता का प्रामाणिक परिचय पाने के लिए भी लूव्र म्यूजियम प्रसिद्ध है। यूनानी और रोमन पुरावशेषों के भी अद्भुत रूप इस म्यूजियम में देखे जा सकते हैं।

पेंटिंग का कलेक्शन

लूव्र के पेंटिंग कलेक्शन को विश्व का सबसे अच्छा कलेक्शन माना जाता है। हालांकि, संख्या के मामले में यह विश्व का नंबर एक नहीं है, पर गुणवत्ता और विविधता की दृष्टि से इसे नंबर एक माना जाता है। स्वाभाविक रूप से इस संग्रह में दो तिहाई हिस्सा फ्रांसीसी चित्रकला का है, पर इटली के महान चित्रकारों की कला के अद्वितीय रूप भी लूव्र म्यूजियम में मौजूद हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आसिफा भुट्टो निर्विरोध संसद सदस्य निर्वाचित

इस्लामाबाद, । आसिफ अली जरदारी के राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद खाली हुई सीट पर पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की छोटी बेटी आसिफा भुट्टो जरदारी को निर्विरोध संसद सदस्य निर्वाचित हुईं। आसिफा ने सिंध प्रांत के शहीद बेनजीराबाद इलाके की एनए-207 सीट के लिए हुए उपचुनाव में भाग लिया था। यह सीट आसिफा के पिता आसिफ अली जरदारी के राष्ट्रपति चुने जाने के बाद खाली हुई थी। क्षेत्र के निर्वाचन अधिकारी की ओर से जारी अधिसूचना के अनुसार तीन उम्मीदवारों के नाम वापस लेने के बाद आसिफा निर्विरोध निर्वाचित हो गईं।

रमजान के महीने में सऊदी अरब में तैयार हो गई दुनिया की पहली मस्जिद

जेद्दा । रमजान के महीने में सऊदी अरब को बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। सऊदी अरब के जेद्दा शहर में दुनिया की पहली 3डी प्रिंटिंग तकनीक से बनी मस्जिद का उद्घाटन हुआ है। 3डी प्रिंटिंग तकनीक से बनी मस्जिद को जेद्दा के जवहरा में बनाया गया है। मस्जिद का नाम स्वर्गीय अब्दुलअजीज अब्दुल्ला शर्बतली के नाम पर रखा गया है। अब्दुलअजीज की पत्नी सऊदी की मशहूर उद्यमी वजनात अब्दुलवहीद ने अपने पति की याद में मस्जिद का निर्माण किया है। मस्जिद प्रोजेक्ट का नेतृत्व फुर्सन रियल एस्टेट की मालकिन अब्दुलवहीद ही कर रही थीं। मस्जिद बनाने के लिए अब्दुलवहीद ने 3डी प्रिंटिंग के क्षेत्र में बड़ा नाम प्रसिद्ध चीनी निर्माता गुआनली से अत्याधुनिक 3डी प्रिंटर से खरीदी तकनीक का इस्तेमाल किया। मस्जिद के बारे में बताकर अब्दुलवहीद ने बताया कि मस्जिद वास्तुशिल्प सुंदरता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि मस्जिद का डिजाइन ऐसा किया गया है कि यह लोगों के बीच शांति और आतिथ्य की भावना को बढ़ावा दे। उनका कहना है कि सऊदी अरब इस तकनीक का इस्तेमाल कर विशाल मस्जिद बनाने वाला पहला देश बना है। 3डी प्रिंटिंग मस्जिद का निर्माण सऊदी अरब के वास्तविक शासक क्राउन प्रिंस शेख मोहम्मद बिन सलमान के महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट विजन 2030 को बढ़ावा देता है। इस विजन का उद्देश्य सऊदी की तेल आधारित अर्थव्यवस्था में विविधता लाना है। इसके तहत सऊदी विदेशी निवेश,पर्यटन जैसे क्षेत्रों में भारी निवेश कर रहा है। इस्लाम में मक्का और मदीना को दो सबसे पवित्र स्थलों के रूप में जाना जाता है। ये दोनों ही पवित्र शहर सऊदी अरब में स्थित है। हर साल मक्का में हज और उमराह के लिए लाखों की संख्या में पर्यटक सऊदी अरब पहुंचते हैं। सऊदी अरब अपने अर्थव्यवस्था में विविधता के लिए रूढ़िवादी इस्लामिक देश की अपनी छवि भी बदल रहा है और उदार इस्लाम को अपना रहा है।

मुइज्जू ने पूर्ववर्ती राष्ट्राध्यक्ष पर लगाया गंभीर आरोप, विदेशी राजदूत की तरह काम करने का

माले । मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने अपने पूर्ववर्ती राष्ट्राध्यक्ष को एक विदेशी राजदूत के रूप में काम करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि इब्राहिम मोहम्मद सोलिया एक विदेश राजदूत के आदेशों पर काम करते थे। हालांकि, मुइज्जू ने किसी देश का नाम नहीं लिया और न ही किसी राजनयिक का नाम लिया। मुइज्जू ने इंटरव्यूद के दौरान सैन्य ड्रोन की खरीद को लेकर विपक्ष की आलोचना के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देकर कहा कि साल 2018 से 2023 तक मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी के पास भी संसद में बहुमत था। हालांकि, पार्टी मालदीव की स्वतंत्रता की रक्षा करने में विफल रही और उन्होंने एक विदेशी देश के हाथों में छोड़ दिया। इब्राहिम सोलिह ने एक विदेशी राजदूत के आदेश पर काम किया था, जिसके परिणामस्वरूप देश को काफी नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा, हमने आर्थिक सहित सभी अर्थों में अपनी स्वतंत्रता खो दी थी। यह सब करने के बाद वे इन सबका हल करने और देश को वापस रास्ते पर लाने के हमारे प्रयासों को स्वीकार नहीं करने वाले हैं, जो मालदीव के लोग चाहते हैं।

मैक्सिको में नौका हादसे में आठ प्रवासियों की मौत

मैक्सिको सिटी । मैक्सिको के दक्षिणी प्रशांत तट के पास एक नौका हादसे में आठ प्रवासियों की मौत हुई है। प्रारंभिक जांच के आधार पर मृतक संभवत- एशिया के थे। अधिकारियों ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। अभियोजकों ने कहा कि इस हादसे में जीवित बचे एक एशियाई व्यक्ति का पता लगा लिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक जांच के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि इस हादसे में जान गंवाने वाले व्यक्ति एशिया के थे। मृतकों के शव प्लाया विसेंटे शहर में एक समुद्र तट के पास मिले। नौका हादसे का कारण पता लगाने के लिए जांच की जा रही है।

गुड फाइडे के पारंपरिक जुलूस में शामिल नहीं हुए पोप फ्रांसिस

रोम । पोप फ्रांसिस रोम के एक बड़े कलागृह में निकाले गए गुड फ्राइडे के पारंपरिक जुलूस में शामिल नहीं हुए। जिससे उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंताए फिर बढ़ गई हैं। वेटिकन ने जुलूस में उनके शामिल नहीं होने की जानकारी दी है। फ्रांसिस के 'वे ऑफ क्रॉस' जुलूस की अगुवाई करने की उम्मीद थी जो ईसा मसीह के जुनून और उन्हें सलीब पर चढ़ाने की घटना का पुन-प्रदर्शन करता है। जैसे ही कार्यक्रम शुरू होने वाला था, तब वेटिकन ने घोषणा की कि फ्रांसिस अपने घर से कार्यक्रम की निगरानी कर रहे हैं। यह पहली बार है जब वह पोप के अपने 11 वर्ष के कार्यकाल में पारंपरिक कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए हैं। वेटिकन ने बयान में कहा, '' प्रार्थना और ईस्टर रविवार को होने वाली सभा के मद्देनजर उनकी सेहत के लिए पोप फ्रांसिस आज शाम कलागृह में 'वे ऑफ क्रॉस' जुलूस की कासा सांता मार्टा से निगरानी करने वाले है।

चीन के शख्स ने मुंह से नलके की तरह पानी निकलकर बनाया रिकॉर्ड

बीजिंग । एक शख्स ने सबसे अधिक समय तक लगातार मुंह से एक नलके की तरह पानी निकालकर वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम किया है। इतना ही नहीं शख्स ने गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज कराया है। दुनिया में कई लोग अजीबोगरीब तरह के रिकॉर्ड बनाते हैं, जिन्हें करना, तब दूर उनके बारे में सोचना भी मुश्किल होता है। हाल ही में एक शख्स ने बहुत ही अजीबोगरीब वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है, इसके बारे में जानकर आप हैरान रह जाएंगे। इसकारण हर तरफ इसकी ही चर्चा हो रही है। शख्स का गजब का टैलेंट देखकर हर कोई हैरान रह गया है। दरअसल शख्स ने सबसे अधिक समय तक लगातार मुंह से एक नलके की तरह पानी निकालकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है, और गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज कराया है। हाल ही में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें एक शख्स को अजीबोगरीब रिकॉर्ड बनाते हुए देखा जा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के रहने वाले 35 साल के शख्स ने पहले 4.5 लीटर पानी पिया। इसके बाद वहां लगातार पांच मिनट, 51.88 सेकंड तक एक नलके की तरह अपने मुंह से पानी निकालता रहा। शख्स का नाम मा हुआ है। रिकॉर्ड को पूरा करने के लिए पानी को लगातार बिना रुके मुंह से बाहर निकालना था। पानी मुंह से इस तरह टपकना चाहिए जैसे पानी नल से निकलता है बिना रुके। इस रिकॉर्ड को बनाने के लिए मा हुआ ने बिल्कुल ऐसा ही किया। इससे पहले ये रिकॉर्ड इथियोपिया के किरुबेल यिल्मा ने 2016 में बनाया था।

बारिश से मकान की छत गिरने से पांच मजदूरों की मौत

लाहौर। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में भारी बारिश के कारण मकान की छत गिरने से करीब पांच खदान श्रमिकों की मौत हुई है। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, यह मकान स्थानीय कोयला खदान के बाहर मजदूरों के रहने के लिए बना था। उन्होंने बताया कि मूसलाधार बारिश के कारण कोयला खदान ढह गई और पांच मजदूर मलबे में दब गए जिससे उनकी मौत हो गई।

काठमांडू में पचाली भैरव खडगे सिद्धी जतरा उत्सव में लोग विभिन्न देवताओं की वेशभूषा धरे हुए नजर आये।

सऊदी अरब ने दुश्मन देश के लिए खोला खजाना, हजारों जरुरतमंद परिवारों को मिलेगा फायदा

रियाद ।सऊदी अरब के किंग सलमान रिलीफ सेन्टर ने यमन को जकात अल-फितर पहुंचाने के लिए एक नागरिक समाज संगठन के साथ समझौते किया हैं। इस समझौते से यमन के 31,333 जरूरतमंद परिवारों को फायदा मिलेगा। समझौते का मकसद यमन के जरूरतमंदों लोगों को ईद से पहले मदद पहुंचाना है, जोकि ग्रहयुद्ध के कारण मानवीय संकट से गुजर रहे हैं ।इससे पहले एजेंसी ने सऊदी रिलीफ सी ब्रिज के जरिए सूडान के लिए अपना सातवां रिलीफ शिपमेंट रवाना था। शिपमेंट में 12 रेफ्रिजरेटर ट्रक शामिल थे, जिनमें 14,960 फूड पार्सल थे। यह जेद्दा शिप इस्लामिक बंदरगाह से चलके गुरुवार को सूडान के सुआकिन बंदरगाह पहुंचा। यह मदद सूडान में खाद्य सुरक्षा परियोजना के दूसरे फेज का हिस्सा है, जिसे सऊदी एजेंसी द्वारा चलाया जा रहा है।

एजेंसी ने मलेशिया को 25 टन खजूर तोहफे में दिए हैं। कई मलेशियाई अधिकारियों की मौजूदगी में मलेशिया में सऊदी राजदूत मुसैद बिन इब्राहिम अल-सलीम ने एजेंसी की ओर से गिफ्ट दिए। इस मौके पर अल-सलीम ने सऊदी अरब और मलेशिया के बीच मजबूत रिश्ते की सराहना की। इसके अलावा रिलीफ ने दक्षिण अफ्रीका के जरूरतमंद परिवारों को 400 फूड पार्सल बाटे हैं। यह वितरण दक्षिण अफ़्रीका में रमज़ान एताम खाद्य वितरण परियोजना का हिस्सा है। सऊदी अरब केएस रिलीफ के तहत संकट से जूंझ रहे कई देशों की मदद कर रहा है। सुडान में चल रहे सऊदी रिलीफ मिशन से करीब 1।5 मिलियन लोगों को फायदा मिलने की उम्मीद है। यह पहल सूडानी लोगों के सामने आने वाली मौजूदा परिस्थितियों को कम करने में मदद कर रही है। सऊदी अरब और सूडान के बीच पहले से ही मजबूत रिश्ते रहे हैं और अब सुडान के बुरे वक्त में सऊदी अरब उसके काम आ रहा है।

परमाणु प्रोग्राम, सैनिकों की पोजीशन, पुतिन का स्वास्थ्य, क्या सच में यूएस तक पहुंचा दी गई सारी जानकारियां, रूसी पॉप स्टार मोसाद एजेंट हैं?

मास्को (एजेंसी)। जंग के मैदान से इतर एक अलग खबर सामने आई है। पुतिन के घर से जासूस को लेकर कई सारी बातें कही जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कहा जा रहा है कि रूस में एक जासूसी नेटवर्क एक्टिव था। इस रूस के जासूसी नेटवर्क के केंद्र में एक टॉप पॉप गायिका थी। अल्ला पुगाचेवा पर आरोप लग रहे हैं कि एक दशक से बहुत सारी जानकारियां पश्चिम देशों को भेजी हैं। आशंका जताई जा रही है कि क्या रूस के गुप्त परमाणु हथियारों की तकनीक यूरोप और अमेरिका तक पहुंचाई गई है? इसके साथ ही रूस की घातक मिसाइलों के तैनाती की जानकारी लीक की गई है। तमाम तरह के सवाल उठ रहे हैं और कटघरे में पॉप गायिका अल्ला पुगाचेवा का नाम सामने आ रहा है।

रूस की तरफ से पॉप स्टार को विदेशी एजेंट घोषित करने की मांग उठने लगी है। अल्ला पुगाचेवा पर मोसाद एजेंट होने का शक है। अल्ला पुगाचेवा यूक्रेन युद्ध और पुतिन सरकार की आलोचक रही हैं। 2022 में युद्ध शुरू होने के बाद से इजरायल में रह रही हैं। इसलिए मोसाद से कनेक्शन जोड़ा जा रहा है। अल्ला

पुगाचेवा के पति मैक्सिम गल्किन पुतिन विरोधी हैं। गल्किन को रूस में विदेशी एजेंट का टैग हासिल है। वहीं पुगाचेवा पर क्लासिफाइड जानकारियां लीक करने के गंभीर आरोप हैं। इसके साथ ही कहा जा रहा है कि रणनीतिक जानकारियों तक उनकी पहुंच रही है। रूस को राजनीतिक तौर पर अस्थिर करने का भी आरोप है।

पॉप स्टार को लेकर कहा जा रहा है कि मोसाद के लिए शीत युद्ध में भी काम किया है। मोसाद के माध्यम से उन्होंने सैकड़ों अहम जानकारियों को अमेरिका तक पहुंचाया है। पश्चिमी देश शीत युद्ध से ही रूस की जासूसी करते आए हैं। अब रूसी पॉप स्टॉर पर विदेशी जासूस होने का शक जताया जा रहा है।

बाइडन का दावा, जी20 में जिस भी देश के नेता से मिले सभी ने कहा- डोनाल्ड ट्रंप को जीतने नहीं दे सकते

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में इस साल राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होना है। इस पद के लिए राष्ट्रपति जो बाइडन और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक दूसरे को कड़ी टक्कर देते दिखाई दे रहे हैं। दोनों नेताओं के बीच वार-पलटवार का दौर जारी है। अब बाइडन ने दावा किया है कि भारत में हुए जी20 समेत कई बैठकों में दुनियाभर के नेताओं ने उनका समर्थन किया है। साथ ही उनसे यह भी कहा कि वह आगामी चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप को नहीं जीतने दे सकते हैं।

उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब राष्ट्रपति बाइडन ने न्यूयॉर्क में अपने चुनाव प्रचार के दौरान एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कहा कि विश्व के नेता हमेशा कहते हैं कि उनका लोकतंत्र दांव पर है। उन्होंने कहा, भारत में जी20 बैठक हो या किसी अन्य देश में हुई बैठक, जब भी दुनिया भर के नेता जुटते हैं तो वो यही कहते हैं कि आप उन्हें (ट्रंप) जीतने नहीं देंगे।

मैं बढ़ा- चढ़ाकर नहीं बता रहा

उन्होंने कहा, आपको लग रहा होगा कि मैं बढ़ा- चढ़ाकर बता रहा हूं, पर ऐसा नहीं है। मैं बिना नाम लिए पत्रकारों को बता सकता हूं कि करीब सभी देशों के नेता मुझसे यह बात कह चुके हैं। दुनिया भर से आए नेता मुझसे हाथ मिलाते हुए कहते हैं कि देश का लोकतंत्र दांव पर है। उन्होंने आगे कहा, मैं यही कहूंगा कि यह एक अतिशयोक्ति नहीं है। इसके बारे में सोचिए। यह एक ऐसा शख्स है, जो नाटो से दूर हो गया है।

अमेरिका के साथ क्या हो रहा है

राष्ट्रपति बाइडन ने ट्रंप के उस अपने बयान पर भी प्रकाश डाला, जिसमें कहा गया है कि वह रूस को उन देशों के साथ जो कुछ भी करना चाहता है उसे करने के लिए प्रोत्साहित करेगा जो रक्षा पर अपने सकल घरेलू उत्पाद का दो प्रतिशत खर्च नहीं करते हैं। बाइडन ने कहा, बस आप देखो कि उन्होंने क्या किया है। बाकी दुनिया सोच रही है कि अमेरिका के साथ क्या हो रहा है। हालांकि वह राहत महसूस कर रहे हैं, इसलिए नहीं कि मैं बहुत खास हूं, बल्कि इसलिए कि मैं ट्रंप नहीं हूं। मैं गंभीर हूं। काश ऐसा इसलिए ही होता क्योंकि उन्हें लगता कि बाइडन इतने गंभीर व्यक्ति हैं। उन्होंने आगे कहा, मुझे लगता है कि वे मेरा सम्मान करते हैं। मुझे लगता है कि वे मेरी बात सुनते हैं। लेकिन मुद्दा यह है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर वह (ट्रंप) फिर से जीतते हैं तो वे अपने देशों के लिए मौत से डरते हैं।

इटली में जारी है जन्म दर में गिरावट-जन्म लेने वाले बच्चों की औसत संख्या 1.24 से घटकर 1.2 रह गई

रोम। संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के विभाग ने एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि जिसमें हर देश में 65 वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों की हिस्सेदारी का विश्लेषण किया गया, जापान 29.8 फीसदी और 23.7 फीसदी बुजुर्गों के साथ इटली दूसरे स्थान पर है, लेकिन फिनलैंड 22.9 फीसदी, पुर्तगाल 22.6 फीसदी, और यूनान 22.5 प्रतिशत से अधिक है। हम इटली की बात करें तो यहां जन्मदर में गिरावट दर्ज की गई है जबकि आप्रवासन के कारण कुल जनसंख्या स्थिर है। इटली में 1 जनवरी, 2024 तक लगभग 5.89 करोड़ लोग थे, जिसमें पिछले साल के मुकाबले 7,000 लोगों की गिरावट है। आंकड़ों से पता चला है कि पिछले साल 379,000 बच्चे पैदा हुए थे, और जन्म दर 2022 में 6.7 प्रति हजार तुलना में प्रति 1,000 लोगों पर 6.4 बच्चों के बराबर थी। संख्यात्मक रूप से, यह 2022 की तुलना में 14,000 कम नवजात शिशु है और 2008 की तुलना में लगभग 197,000 कम है। वर्ष 2008 में पहली बार जन्म दर में गिरावट शुरु हुई थी। इटली में जन्म लेने वाले बच्चों की औसत संख्या 2022 में 1.24 से घटकर 2023 में 1.2 रह गई, जो 1995 में दर्ज प्रति महिला 1.19 बच्चों के सर्वकालिक निम्न स्तर के करीब था।

राष्ट्रपति बाइडेन ने पाक पीएम शाहबाज को खत लिखा, कहा- पाकिस्तान को सपोर्ट करते रहेंगे

वॉशिंगटन/इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में फरवरी में हुए आम चुनाव के बाद पहली बार अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने नए पाक पीएम शाहबाज शरीफ के नाम एक खत लिखा। इसमें उन्होंने दोनों देशों के रिश्तों की अहमियत बताते हुआ पाकिस्तान के लिए अमेरिका के सपोर्ट की बात की।

खत में बाइडेन ने लिखा कि हमारी साझेदारी दुनियाभर के लोगों और क्षेत्र की सुरक्षा के लिए अहम है। अमेरिका वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियों से निपटने के लिए हमेशा पाकिस्तान के साथ खड़ा रहेगा। इसी के साथ यह पहली बार है जब बाइडेन ने पाकिस्तान में चुनाव के बाद किसी प्रधानमंत्री से बात की है।

साल 2018 में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने चुनाव जीता था। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक, तब अमेरिकी राष्ट्रपति ने उनसे कोई बात नहीं की थी। इसके बाद साल 2022 में इमरान की सरकार गिरने के बाद जब शाहबाज शरीफ ने सरकार बनाई, तब भी बाइडेन ने उनसे कोई संपर्क नहीं किया।

दोनों देशों की साझेदारी मजबूत करने पर फोकस

बाइडेन ने अपने लेटर में लिखा कि अमेरिका विकास और मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए पाकिस्तान के साथ मिलकर काम करता रहेगा। दोनों देश मिलकर मजबूत साझेदारी और अपने नागरिकों के बीच बेहतर रिश्ते कायम करेंगे। इससे पहले पाकिस्तान में मौजूद अमेरिकी राजदूत ने 15 मार्च को पाकिस्तान को अमेरिका का अहम पार्टनर बताया था। उन्होंने उम्मीद जताई थी कि पाकिस्तान की नई सरकार अमेरिका के साथ मिलकर द्विपक्षीय रिश्तों को मजबूत करने के लिए काम करेगी।

तालिबान का फरमान- यौन अपराध में लिप्त महिलाओं को पत्थर मार हलाक कर दें

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान में महिलाओं को व्यभिचार के लिए सार्वजनिक रूप से कोड़े मारे जाएंगे। इतना ही नहीं, पत्थर मारकर उस स्त्री की हत्या कर दी जाएगी। रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने पश्चिमी लोकतंत्र के खिलाफ लड़ाई जारी रखने की भी कसम खाई है और इस आशय का फरमान जारी कर दिया है। तालिबान कहीं अफगानिस्तान को अंधकार युग में वापस लेकर न चला जाए, यह आशंका लंबे वक्त से जताई जा रही है। मगर, अब यह डर सच साबित होता नजर आ रहा है।

दरअसल, तालिबान सुप्रीमो मुल्ला हिबतुल्ला अखुंदजादा ने सरकारी टेलीविजन पर नया संदेश जारी किया है।

इसके अलावा संवाददाताओं को भेजे गए निमंत्रण में कहा गया है कि 'बहनों के लिए उपयुक्त जगह की कमी के कारण, हम महिला पत्रकारों से माफी मांगते हैं।' अखुंदजादा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय से मिल रहे महिलाओं के अधिकार तालिबान की इस्लामी शरिया कानून के विरोधाभासी हैं। उन्होंने कहा, क्या महिलाएं उस तरह के अधिकार चाहती हैं जिनके बारे में पश्चिमी लोग बात कर रहे हैं? वे शरिया और मौलवियों की राय के खिलाफ हैं, जबकि मौलवियों ने पश्चिमी लोकतंत्र को उखाड़ फेंका। तालिबान प्रमुख के मुताबिक, हमने मुजाहिदीन से कहा कि हम पश्चिमी लोगों से कहते हैं कि आपके खिलाफ 20 साल लड़ाई लड़ी। हम आपके खिलाफ 20 या उससे भी अधिक बरसों तक लड़ेंगे। यह खत्म नहीं होने वाला है। हम इस धरती पर शरिया लाएंगे। गौरतलब है कि अफगानिस्तान के विद्यालयों में बुधवार को लड़कियों के बिना ही नया शैक्षणिक सत्र शुरू हो गया। दरअसल, तालिबान ने छठी कक्षा से आगे की कक्षाओं में लड़कियों की पढ़ाई पर रोक लगा दी है। महिला शिक्षा पर रोक लगाने वाला अफगानिस्तान दुनिया का इकलौता देश है। संयुक्त राष्ट्र बाल एजेंसी के मुताबिक, प्रतिबंध से 10 लाख से अधिक लड़कियां प्रभावित हुई हैं। एजेंसी का यह भी अनुमान है कि सुविधाओं की कमी और अन्य कारणों से तालिबान के कब्जे से पहले ही 50 लाख लड़कियां विद्यालय छोड़ चुकी थीं। तालिबान के शिक्षा मंत्रालय ने नए शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत एक समारोह के साथ की जिसमें महिला पत्रकारों को शामिल होने की अनुमति नहीं थी।

पाकिस्तान पहुंचे चीनी अधिकारी खुद करेंगे आतंकी हमले की जांच

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के अशांत पश्चिमोत्तर प्रांत खैबर-पख्तूनख्वा में मंगलवार को विस्फोटक से भरे एक वाहन ने एक बस को टक्कर मार दी थी, जिससे बस में सवार कम से कम पांच चीनी नागरिकों की मौत हो गई थी। ये चीनी नागरिक दासू जलविद्युत परियोजना पर काम कर रहे थे। एक सरकारी बयान में कहा गया है कि शुक्रवार को गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने यहां चीनी दूतावास में जांचकर्ताओं से मुलाकात की और उन्हें अब तक की जांच के बारे में जानकारी दी। इस भीषण आत्मघाती हमले की जांच के लिए चीनी अधिकारी पाकिस्तान पहुंचे हैं। पाकिस्तान के गृह मंत्रालय ने इसकी जानकारी दी है। पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में आतंकवादी हमले में चीन के पांच नागरिकों की मौत हो गई थी। अब इस मामले की जांच के लिए पड़ोसी देश से जांचकर्ता शुक्रवार को पाकिस्तान पहुंचे। चीन के ताजा कदम से प्रतीत होता है कि उसे पाकिस्तान की जांच पर भरोसा नहीं है।

'पावर कंस्ट्रक्शन कॉरपोरेशन ऑफ चाइना' (पीसीसीसी) द्वारा केपी प्रांत के स्वाबी जिले में तारबेला पांचवीं एक्सटेंशन जलविद्युत परियोजना में कार्यों को निलंबित करने और 2,000 से अधिक श्रमिकों को नौकरी से निकालने के एक दिन बाद सामने आया है। खबर के अनुसार चीन के नागरिक दासू जलविद्युत परियोजना पर काम कर रहे थे और 4,320 मेगावाट की इस परियोजना का निर्माण विश्व बैंक की मदद से चीन गेझोउबा द्वारा किया जा रहा है।इसके अनुसार तारबेला परियोजना के बाद, चीनी कंपनियों ने सुरक्षा चिंताओं के कारण अब दासू और डायमर-भाषा बांधों पर काम रोक दिया है और दोनों परियोजनाओं पर काम कर रहे चीन के लगभग 1,000 इंजीनियरों ने काम बंद कर दिया है। 'द न्यूज इंटरनेशनल' की खबर के अनुसार, दोनों परियोजनाओं से जुड़े स्थानीय कर्मचारियों को अगले आदेश तक घर पर रहने का निर्देश दिया गया है।चीन के जांचकर्ताओं की यह यात्रा पाकिस्तान के अधिकारियों द्वारा हमले की अपनी जांच के प्रारंभिक निष्कर्षों को चीनी दूतावास के साथ साझा करने के दो दिन बाद हो रही है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने बुधवार को चीन के नागरिकों पर घातक आतंकवादी हमले की संयुक्त जांच का आदेश दिया। मंगलवार को हुए हमले की अभी तक किसी समूह ने कोई जिम्मेदारी नहीं ली है।

प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) और बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) से जुड़े विद्रोहियों ने हालांकि पहले विदेशी नागरिकों के खिलाफ ऐसे हमले किए हैं। विदेश कार्यालय की प्रवक्ता मुमताज बलूच ने बृहस्पतिवार को साप्ताहिक प्रेस वार्ता में कहा था कि इस तरह के घृणित हमले आतंकवाद से लड़ने के पाकिस्तान के संकल्प को और मजबूत बनाते हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और चीन मिलकर आतंकवादियों के खिलाफ दृढ़ता से कार्रवाई करेंगे।

विदेश कार्यालय की प्रवक्ता ने कहा, ''पाकिस्तान में चीनी नागरिकों, परियोजनाओं और संस्थानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पाकिस्तान अपने चीनी भाइयों के साथ मिलकर काम करता रहेगा।'' पाकिस्तान के अशांत खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत में एक आत्मघाती हमले में पांच चीनी नागरिकों के मारे जाने के बाद दो और चीनी कंपनियों ने जलविद्युत परियोजनाओं पर काम बंद कर दिया है। शुक्रवार को एक खबर यह जानकारी दी गई।दासू बांध परियोजना पर काम कर रहे एक अधिकारी ने पुष्टि की कि चीनी कंपनी ने काम बंद कर दिया है और स्थानीय कर्मचारियों को घर पर रहने के लिए कहा गया है।

पाकिस्तान ने अफगानिस्तान पर लगाया आरोप

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने अपनी सीमाओं के भीतर आतंकवाद से निपटने में अफगानिस्तान की प्रगति की कमी पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने पाकिस्तान के लिए खतरों को कम करने के लिए तालिबान सरकार द्वारा और अधिक कड़े सीमा नियंत्रण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है।आसिफ ने कहा, आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि को देखते हुए सीमा पर बड़े पैमाने पर बदलाव की आवश्यकता है। पाकिस्तान में आतंकवाद का स्रोत अफगानिस्तान ही है। हमारे प्रयासों के बावजूद काबुल इस दिशा में कोई प्रगति नहीं कर रहा है।पाकिस्तान में हाल में कई आतंकवादी हमले हुए हैं। वह इनमें से कुछ के लिए तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को जिम्मेदार मानता है। आपको बता दें कि टीटीपी अफगान तालिबान का हिस्सा है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

बिहार में आरजेडी 26, कांग्रेस 9 और लेफ्ट दल 5 सीटों पर लड़ेंगे चुनाव

लालू ने सभी सीटों पर किए उम्मीदवार घोषित, कांग्रेस कल कर सकती है घोषणा

पटना।

बिहार में सीटों को लेकर आरजेडी और कांग्रेस के बीच चल रही खींचतान खत्म हो गई है। महागठबंधन में काफी मशक्कत के बाद लालू की आरजेडी बिहार में सबसे ज्यादा सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ेगी। उसके बाद कांग्रेस और फिर लेफ्ट दलों बंटावारे में आई सीटों पर अपने-अपने उम्मीदवार उतारेंगे। उम्मीदवारों को लेकर कांग्रेस की कल यानी रविवार को दिल्ली में बैठक होने वाली है। आखिरकार बिहार में विपक्षी महागठबंधन दलों के बीच सीट बंटवारा हो चुका है। लालू यादव की आरजेडी को 26, कांग्रेस 9 और लेफ्ट दलों (भाकपा माले, भाकपा और माकपा) को 5 सीटें मिली हैं। ज्ञात हो कि कांग्रेस ने 2019 में भी 9 सीटों पर चुनाव लड़ा था। इनमें से सिर्फ एक सीट पर जीत हासिल हुई थी। वहीं आरजेडी एक भी सीट हासिल नहीं कर सकी थी। लालू यादव ने उनके खाते में आई सभी सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। सीटें बंटावारे के बाद अब कांग्रेस भी अपने उम्मीदवारों के नाम घोषित करने में जुट गई है। कांग्रेस चुनाव समिति की 31 मार्च यानी रविवार को दिल्ली में बैठक होनी है, जिसमें बिहार में किन उम्मीदवारों को टिकट देना है इस पर बातचीत होगी। सूत्रों की मानें तो इसी दिन कांग्रेस अपने उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर सकती है।

किशनगंज से वर्तमान सांसद मोहम्मद जावेद का नाम इस बार भी लगभग तय माना जा रहा। भागलपुर से विधायक अजीत शर्मा का नाम सबसे आगे चल रहा है। कटिहार से तारिक अनवर कांग्रेस के उम्मीदवार हो सकते हैं। पटना साहिब सीट पर मीरा कुमार के बेटे अंशुल अभिजीत और राजकुमार राजन के नाम मोहर लग सकती हैं। वहीं समस्तीपुर सीट से पूर्व आईपीएस वीके रवि और अशोक राम दावेदारों में माने जा रहे हैं। कांग्रेस मुजफ्फरपुर से विधायक विजेंद्र चौधरी को अपना लोकसभा उम्मीदवार बना सकती है। महाराजगंज से विधायक विजय शंकर दुबे और कांग्रेस के बिहार प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश सिंह के बेटे आकाश सिंह के नाम की चर्चा है। पश्चिम चंपारण से केदार शाश्वत कांग्रेस प्रत्याशी हो सकते हैं। वहीं सासाराम सीट पर पार्टी किसी नए चेहरे को मौका दे सकती है।

लालू यादव की आरजेडी बिहार में जिन 26 सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ेगी उनमें दरभंगा, बांका, अररिया, मुंगेर, सीतामढ़ी, वैशाली, झंझारपुर, मधुबनी, सीवान, हाजीपुर, औरंगाबाद, मधेपुरा, सुपौल, पूर्णिया, गया, जमुई, नवादा, सारण, पाटलिपुत्र, बक्सर, उजियारपुर, जहानाबाद, वाल्मीकि नगर, पूर्वी चंपारण, शिवहर और गोपालगंज शामिल हैं। भाकपा माले तीन सीटों आरा, नालंदा और काराकाट से चुनाव लड़ेगी। भाकपा को बेगूसराय और माकपा को खगड़िया सीट मिली है।

एनडीए में भाजपा 17 तो जेडीयू 16 पर लड़ेगी चुनाव

भाजपा और नीतीश कुमार की जेडीयू (एनडीए) के सीट बंटावारे की बात करें तो भाजपा 17 और जेडीयू 16 सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ रही है। वहीं चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) को 5 सीटें मिली हैं जिस पर वह चुनाव लड़ रही है। जीतन राम मांझी की हिन्दुस्तान आवाम मोर्चा और उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा को 1-1 सीट पर ही संतोष करना पड़ा है।

15 साल बाद पहली बार मेरठ में भाजपा और रालोद एक साथ शेयर करेंगे मंच

पांच लोकसभा सीटों को साधने के लिए पीएम मोदी, सीएम योगी और जयंत चौधरी होंगे साथ

मेरठ।

बीते 15 साल बाद पहली बार मेरठ में भाजपा और रालोद का कुनबा एक साथ दिखाई देगा। वजह ये है कि मेरठ से पांच लोकसभा सीटों को साधने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और रालोद के जयंत चौधरी एक मंच पर रहेंगे। 31 मार्च यानी कल मेरठ में होने वाली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली कई सियासी मामलों में अलग होने जा रही है। 15 साल बाद ये पहली रैली होगी जिसमें रालोद मुखिया चौधरी जयंत सिंह भाजपा के साथ मंच साझा करेंगे। मोदी और जयंत के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रैली से पांच लोकसभा सीटों को साधेंगे। वर्ष 2002 के विधानसभा चुनाव में रालोद ने भाजपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ा, जिसमें आरएलडी 14 सीटें जीतने में सफल रही, लेकिन चुनाव के बाद अजित सिंह ने अटल सरकार से इस्तीफा दे दिया और भाजपा ने गठबंधन तोड़ लिया। इस लिहाज से ये रैली दोनों दलों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। रैली के जरिए मेरठ, बागपत, मुजफ्फरनगर के अलावा कैराना और बिजनौर लोकसभा को साधा जाएगा। रालोद को अमूमन सबसे ज्यादा भाजपा का साथ ही रास आया है। 2009 के लोकसभा चुनाव में चौधरी जयंत सिंह भाजपा गठबंधन में ही मथुरा से सांसद निर्वाचित हुए। रालोद को भाजपा ने सात लोकसभा सीटें दी। इनमें मुजफ्फरनगर और नगीना को छोड़कर रालोद ने बागपत, हाथरस, मथुरा, अमरोहा और बिजनौर लोकसभा सीट पर जीत हासिल की। प्रधानमंत्री की रैली के लिए चार हेलीपैड बनाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री के तीन हेलीकॉप्टर के लिए केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के मैदान में तीन हेलीपैड बनाए गए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का हेलीकॉप्टर सभा स्थल से 200 मीटर दूर रोम्बस स्कूल में उतरेगा। एसपीजी ने हेलीकॉप्टर लैंडिंग का रिहर्सल देखकर दिशा निर्देश दिए। पुलिस-प्रशासनिक अधिकारियों ने रैली स्थल का निरीक्षण किया। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी के भी आने की चर्चा है, ऐसी सूरत में पांचवां हेलीपैड भी बनाया जा सकता है।

आईटी के नोटिस पर असम के सीएम ने कांग्रेस पर साधा निशाना

करों का भुगतान नहीं करना गरीबों और वंचितों का हक छीनना

नई दिल्ली।

कांग्रेस पार्टी को विगत दिवस को 1823 करोड़ रुपये की मांग वाला टैक्स नोटिस आयकर विभाग ने भेजा है। नोटिस पर भाजपा नेता और असम के मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस टैक्स का भुगतान नहीं कर रही है इसका मतलब वह कल्याणकारी योजनाओं, गरीबों और वंचितों के खिलाफ है। आयकर विभाग ने शुक्रवार को 1823 करोड़ रुपये की मांग वाला टैक्स नोटिस कांग्रेस को भेजा है जिस पर असम के मुख्यमंत्री हेमंत सरमा ने कांग्रेस को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि वह करों का भुगतान न करके गरीबों के हक छीन रही है। उन्होंने आगे कहा कि कोई व्यक्ति सरकार को कर देने से इनकार कर रहा है, तो समझो कि वह गरीबों के हक छीन रहा है। टैक्स का पैसा सार्वजनिक कल्याण के लिए जाता है। अगर कांग्रेस करों का भुगतान नहीं कर रही है, तो इसका मतलब है कि वे कल्याणकारी गतिविधियों, गरीबों और वंचितों के खिलाफ हैं। कांग्रेस ने भी पलटवार करते हुए कहा कि भाजपा ने कर नियमों का उल्लंघन किया है। कांग्रेस नेता अजय माकन ने दावा किया कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को आईटी विभाग निशाना बना रहा है। चुनाव से पहले फरवरी में कांग्रेस के बैंक खातों को फ्रीज करने का अवैध प्रयास कई महीने से चल रहा था। उधर, कांग्रेस के वरिष्ट नेता जयराम रमेश ने भाजपा पर टैक्स टेररिज्म का आरोप लगाया।

उन्होंने कहा कि भाजपा कुछ भी करके कांग्रेस को आर्थिक रूप से कमजोर करना चाहती है, लेकिन हम डरने वाले नहीं हैं। वहीं, राहुल गांधी ने कहा कि अगर उनकी सरकार बनती है तो वो लोकतंत्र की हत्या करने वालों पर सख्त कार्रवाई करेंगे।

आप नेता सत्येंद्र जैन के खिलाफ सुकेश चंद्रशेखर से उगाही मामले में सीबीआई जांच को मिली मंजूरी

नई दिल्ली ।

दिल्ली के पूर्व मंत्री और आप नेता सत्येंद्र जैन के खिलाफ गृह मंत्रालय ने भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम के तहत सीबीआई जांच की मंजूरी दे दी है। सत्येंद्र जैन के खिलाफ ठग सुकेश चंद्रशेखर से प्रोटेक्शन मनी के रूप में 10 करोड़ रुपये की उगाही करने का आरोप है। साथ ही इस मामले में सतेंद्र जैन और तिहाड़ जेल के पूर्व डीजी संदीप गोयल पर तिहाड़ जेल में जबरन वसूली का रैकेट चलाने और दिल्ली की विभिन्न जेलों में बंद हाई प्रोफाइल कैदियों से प्रोटेक्शन मनी वसूलने का भी आरोप है। ठग सुकेश चंद्रशेखर ने सत्येंद्र जैन और संदीप गोयल के साथ ही तिहाड़ जेल के अन्य अधिकारियों राजकुमार और मुकेश प्रसाद पर साल 2019-22 के बीच 12।50 करोड़ रुपये वसूलने का आरोप लगाया था। इसे लेकर सुकेश चंद्रशेखर ने दिल्ली के उपराज्यपाल को एक शिकायत भी भेजी थी। आरोप है कि सतेंद्र जैन व तिहाड़ जेल के अन्य अधिकारियों ने पैसे की एवज में अपने सरकारी पद का दुरुपयोग करते हुए जेल में बंद कैदियों को जेल मैन्युअल के खिलाफ कई सुविधाएं मुहैया करवाई थीं। ज्ञात हो कि मनी लॉन्ड्रिंग के केस में तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के पूर्व मंत्री सत्येन्द्र जैन को तत्कालीन जेल अधिकारियों ने न सिर्फ जेल में वीआईपी ट्रीटमेंट दिया था, बल्कि अन्य कैदियों से मसाज तक मुहैया करवाई थी।

रील बनाने के लिए पुलिस बेरिकेट जलाया, मामला दर्ज

- एक आरोपी गिरफ्तार, अन्य की तलाश

नई दिल्ली। आज हर इंसान फेमस होना चाहत है, जिसके के लिए वह किसी भी खतरे का सामने करने के लिए तैयार रहता है। आज-कल रील बनाने का शौक इनता बढ़ गया है कि कोई ट्रेन में, कोई सड़क पर तो कोई ट्रैफिक नियमों की धज्जियां उड़ा रहा है। ऐसा ही एक मामला दिल्ली में सामने आया। जहां एक व्यक्ति ने रील बनाने के लिए दिल्ली पुलिस के बेरिकेट में आग ही लगा दी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें कुछ युवक रील बनाने के लिए दिल्ली पुलिस के बैरिकेड को जला रहे हैं। दिल्ली के निहाल विहार थाने में एफआईआर दर्ज की गई और वीडियो में दिख रहे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। इसके अलावा पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश कर रही है जो इस कृत्य में शामिल थे। यह घटना शुक्रवार की बताई जा रही है। वहीं दूसरी तरफ एक और वीडियो में एक व्यक्ति व्यस्त सड़क पर ट्रैफिक को रोक रहा है। बिना तारीख वाले इस वीडियो में पश्चिम दिल्ली स्थित पश्चिम विहार में एक व्यस्त सड़क पर कार चलाते हुए दिख रहा है। वह कार को सड़क के बीचोंबीच खड़ा कर देता है और ट्रैफिक को रोक लेता है। वीडियो में पीले रंग की पिकअप ट्रक के पीछे वाहनों की कतार लग जाती है। कार चलाने वाला और उसकी साथी महिला कैमरे के सामने पोज देने के लिए कार से बाहर आती है। यही व्यक्ति उसी कार को खतरनाक तरीके से चलाते हुए देखा गया है। उसे चलती कार से दरवाजा खोलकर रखकर वीडियो बनाते देखा गया। जहां उसका एक हाथ स्टीयरिंग पर तो वहीं दूसरे हाथ का इस्तेमाल वह तेज रफ्तार में वीडियो शूट करने के लिए कर रहा था। इस व्यक्ति का यह वीडियो वायरल हो गया है। एक सोशल मीडिया यूजर्स ने इस व्यक्ति की जमकर आलोचना की। साथ ही दिल्ली पुलिस से कार्रवाई करने का आग्रह करते हुए वीडियो साझा किया।

भाजपा की सरकार ने देश को कर्जे में डुबा दिया: प्रियंका

-जनता पर बढ़ रहा महंगाई आर्थिक तंगी और बेरोजगारी का बोझ

नई दिल्ली।

पिछले 10 सालों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने देश को कर्जे में डुबा दिया है। देश का कर्ज़ ने बढ़ाकर 205 लाख करोड़ पहुंचा दिया है। बीते 10 साल में मोदी सरकार ने लगभग 150 लाख करोड़ कर्ज लिया। यह आरोप प्रियंका गांधी वाड्रा ने लगाए हैं। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मोदी सरकार पर देश के आम नागरिकों भारी कर्ज में डूबने का आरोप लगाते हुए कहा है कि जब देश की जनता का भला नहीं हो रहा है तो उन पर कर्ज में क्यों थोपा जा रहा है। आज देश के हर नागरिक पर लगभग डेढ़ लाख का औसत कर्ज है। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि यह पैसा राष्ट्रनिर्माण के किस काम में लगा। क्या बड़े पैमाने पर नौकरियाँ पैदा हुईं, क्या किसानों की आमदनी दोगुनी, क्या स्कूल और अस्पताल में काम हुआ। सार्वजनिक क्षेत्र मजबूत हुआ या कमजोर कर दिया गया। क्या बड़ी-बड़ी फ़ैक्टरियाँ और उद्योग लगाये गये। उन्होंने कहा कि अगर ऐसा नहीं हुआ, अगर अर्थव्यवस्था के कोर सेक्टर्स में बदहाली देखी जा रही है, श्रम शक्ति में गिरावट आई है, छोटे-मध्यम कारोबार तबाह हो गए तो आखिर यह पैसा गया कहाँ। किसके ऊपर खर्च हुआ? इसमें कितना पैसा बट्टेखाते में गया। बड़े-बड़े खरबपतियों की कर्जमाफी में कितना पैसा गया। अब सरकार नया कर्ज लेने की तैयारी कर रही है तो सवाल उठता है कि पिछले 10 साल आम जनता को राहत मिलने की बजाय बेरोजगारी, महंगाई आर्थिक तंगी का बोझ बढ़ता ही जा रहा है यह सब देखते हुए भाजपा सरकार जनता को कर्ज में क्यों डुबो रही है।

देवभूमि उत्तराखंड में इस बार दोनों दलों ने नए चेहरों को उतारा

अल्मोड़ा सीट पर ही पुराने प्रतिद्वंद्वियों के बीच टक्कर

नैनीताल ।

उत्तराखंड में कांग्रेस और भाजपा दोनों ही प्रमुख पार्टियां पुराने दिग्गजों से धीरे-धीरे दूरी बना रही हैं, ताकि नए चेहरों को मौका मिले सकें। तभी 2024 के रण में केवल अल्मोड़ा सीट पर ही पुराने प्रतिद्वंद्वियों के बीच टक्कर होने जा रही है। उत्तराखंड कांग्रेस और भाजपा में पीढ़ी परिवर्तन का दौर शुरू हो चुका है। प्रदेश की दोनों ही प्रमुख पार्टियां पुराने दिग्गजों से धीरे-धीरे किनारा कर रही हैं, ताकि नए चेहरों को मौका मिले। इसका नतीजा है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में अल्मोड़ा सीट पर ही पुराने प्रतिद्वंद्वियों अजय टम्टा और प्रदीप टम्टा के बीच टक्कर होने जा रही है। हरिद्वार और पौड़ी सीट पर दोनों ही पार्टियों के प्रत्याशी पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ने वाले हैं। जबकि नैनीताल और टिहरी सीट पर भाजपा के प्रत्याशियों के मुकाबले कांग्रेस ने नए चेहरों को मैदान में उतारा है। सबसे अधिक दिलचस्प यह है कि पांचों सीटों पर दोनों ही बड़ी पार्टियों के छह चेहरे पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।

2012 का उपचुनाव जीतने के बाद से बीजेपी की माला राज्यलक्ष्मी शाह टिहरी लोकसभा सीट से लगातार कांग्रेस प्रत्याशी को परास्त कर रही हैं। माला से मुकाबला करने के लिए इस बार कांग्रेस ने दो बार मसूरी से विधायक रहे जोत सिंह गुनसोला को चुनावी मैदान में उतारा है। गुनसोला पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ने वाले है। 1991 से 2006 तक इस सीट पर बीजेपी का दबदबा रहा। टिहरी राजघराने के मानवेंद्र शाह बीजेपी के टिकट से लगातार पांच चुनाव जीते। शाह के निधन के बाद 2007 में हुए उपचुनाव में पहली बार विजय बहुगुणा को जीत मिली। इसके बाद 2009 लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के विजय बहुगुणा फिर से जीतकर लोकसभा पहुंचे। बहुगुणा के सीएम बनने के बाद हुए उपचुनाव में भाजपा ने फिर सीट पर कब्जा जमा लिया। हरिद्वार में भाजपा उम्मीदवार त्रिवेंद्र रावत और पूर्व सीएम हरीश रावत के बेटे व कांग्रेस प्रत्याशी वीरेंद्र रावत के बीच सियासी वर्चस्व की जंग होगी। दोनों ही प्रत्याशी पहली बार लोकसभा के लिए चुनावी जंग में उतर रहे हैं। हरीश इस सीट से सांसद रह चुके है। लगातार दो बार से इस सीट को बीजेपी जीतती रही है, लेकिन इस बार बीजेपी ने अपना प्रत्याशी बदल दिया है। बीजेपी ने पूर्व सीएम रमेश पोखरियाल निशंक के स्थान पर पूर्व सीएम रावत को मैदान में उतार दिया है, जबकि हरीश रावत ने खुद चुनाव लड़ने के बजाय अपने बेटे को चुनावी मैदान में उतरवाया है। हरिद्वार जिले की एक सीट से हरीश रावत की बेटी विधायक भी है। हरिद्वार जिले के ही खानपुर के विधायक उमेश कुमार ने भी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में ताल ठोकी है। हरिद्वार संसदीय क्षेत्र में देहरादून की डोईवाला, ऋषिकेश और धर्मपुर विधानसभा क्षेत्र आते हैं। पौड़ी सीट पर भाजपा प्रत्याशी अनिल बलूनी और कांग्रेस प्रत्याशी गणेश गोदियाल दोनों ही नए चेहरे हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी दोनों ही पार्टियों ने नए चेहरे पर दांव खेला था। तब बीजेपी के तीरथ सिंह रावत के सामने कांग्रेस ने पूर्व सीएम भुवन चंद्र खंडूडी के बेटे मनीष खंडूडी को टिकट दिया था, लेकिन खंडूडी चुनाव हार गए।

भारतीय नेवी के जवानों ने दिखाई बहादुरी 23 पाकिस्तानियों की समुद्री लुटेरों से बचाई जान

नई दिल्ली।

इस वक्त भारतीय नौसेना की बहादुरी की डंका पूरी दुनिया में बच रहा है। उन्होंने अब तक कई जहाजों को समुद्री लुटेरों से बचाने में सफलता हासिल की है। इसमें सवार लोगों की जान बचाई है। हाल ही में 23 पाकिस्तानियों को समुद्री लुटेरों से बचाया गया है। समुद्र में सभी देश सुरक्षित तरीके से आवाजाही कर सकें इसके लिए भारतीय नौसेना लगातार अभियान चला रही है। 'ऑपरेशन संकल्प' के जरिये इंडियन नेवी कई बार समुद्री लुटेरों के मंसूबों पर पानी फेर चुकी है। समुद्री लुटेरों ने ईरान की एक मछली पकड़ने वाली शिप को हाइजैक कर लिया था। इंडियन नेवी के पास इसको लेकर इमर्जेंसी कॉल आई। भारतीय नौसेना ने इस पर तत्काल कार्रवाई करते हुए ईरानी शिप को बचाने के लिए अरब सागर में अभियान छेड़ दिया। घंटों की मशक्कत के बाद इंडियन नेवी ने न केवल ईरानी पोत को लुटेरों के चंगुल से छुड़ाया, बल्कि चालक दल के 23 पाकिस्तानी सदस्यों को बचा लिया।जानकारी के मुताबिक, ईरान की अल-कंबर 786 नाम की पोत अरब सागर में मछली पकड़ने गई थी. इसके चालक दलों में 23 पाकिस्तानी नागरिक थे। तभी अचानक से समुद्री लुटेरों ने हमला कर शिप को हाइजैक कर लिया। भारतीय नौसेना की कमान को इसकी सूचना मिलते ही अपहृत शिप को छुड़ाने की कोशिश तेज कर दी गई। इस अभियान में गशे ती पोत आईएनएस सुमेधा की भूमिका काफी अहम रही। सुमेधा की मदद से हाइजैक ईरानी शिप का पता लगाया गया। पोत को समुद्री तट से तकरीबन 167 किलोमीटर दूर लोकेट किया गया।

अल-कंबर को समुद्री लुटेरों के चंगुल से छुड़ाने के लिए गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट आईएनएस त्रिशूल की भूमिक भी महत्वपूर्ण रही।ईरानी शिप को लोकेट करने के बाद उसे सुरक्षित छुड़ाने का अभियान चलाया गया।

संक्षिप्त समाचार

सचिन ने की दोस्तों संग जंगल सफारी, खूब किया इन्जाय

-बाघ व हाथी को देख रोमांचित हुए तेंदुलकर व उनकी पत्नी

नैनीताल। मास्टर बिलास्टर सचिन तेंदुलकर पत्नी अंजली और दोस्तों के साथ रामनगर पहुंचे वहां एक रिजॉर्ट में रात्रि विश्राम के बाद वे कॉर्बेट टाइगर रिजर्व पहुंचे जहां सचिन तेंदुलकर को जंगल सफारी के दौरान ढिकाला में बाघ के दीदार हुए। सचिन तेंदुलकर पत्नी अंजली और दोस्तों के साथ गुरुवार को रामनगर आए यहां एक रिजॉर्ट में रात्रि विश्राम के बाद वे शुक्रवार सुबह छह बजे धनगढ़ी गेट पहुंचे। यहां से वह पत्नी और दोस्तों के साथ जिप्सियों में सवार होकर ढिकाला के लिए रवाना हुए। सांभर रोड पर सचिन तेंदुलकर को पहले बाघ दिखाई दिया, उसके कुछ ही दूरी पर हाथी भी नजर आया। बाघ और हाथी को देख वह काफी रोमांचित हुए। दोपहर तक जंगल सफारी करने के बाद उन्होंने खिनानौली रेस्ट हाउस में भोजन किया और शाम को फिर जंगल सफारी का लुत्फ उठाया। खिनानौली रेस्ट हाउस में उन्होंने रात्रि विश्राम किया। शनिवार को पार्क से बाहर आने की उम्मीद है, लेकिन अभी कोई पुष्टि नहीं हुई है।

विधानसभा अध्यक्ष के कमरे के बाहर धरने पर बैठे निर्दलीय विधायक

शिमला । भाजपा में शामिल होने से पूर्व इन विधायकों ने 22 मार्च को विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया को विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा सौंपा था। हिमाचल के तीन निर्दलीय विधायक शनिवार सुबह विधानसभा अध्यक्ष के चैंबर के बाहर धरने पर बैठ गए हैं। निर्दलीय विधायकों का कहना है कि एक सप्ताह बाद भी इनका इस्तीफा स्वीकार नहीं हुआ। यह देखकर विधायक केएल ठाकुर, आशीष शर्मा, होशियार सिंह धरने पर बैठ गए हैं। तीनों निर्दलीय विधायक विधानसभा अध्यक्ष की कार्यशैली पर सवाल उठा चुके हैं। विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष पर सरकार के दबाव में आकर इस्तीफा स्वीकार न करने के आरोप लगाया हैं। विधायक आशीष शर्मा ने कहा कि एक तरफ हमारे इस्तीफे स्वीकार नहीं किए जा रहे, दूसरी ओर घर के बाहर लगे विधायक के साइन बोर्ड को हटाने के लिए विभाग के कर्मचारी भेजे जा रहे हैं। निर्दलियों ने चेताया कि यदि दो दिन में इस्तीफे मंजूर नहीं किए तब कोर्ट जाएंगे। सुप्रीम कोर्ट जाएंगे या हाईकोर्ट, इस बारे में लीगल सेल से बात चली है।

19 अप्रैल से 1 जून तक एग्जिट पोल पर रोक

नई दिल्ली । चुनाव आयोग ने एक अधिसूचना जारी कर आगामी लोकसभा चुनाव और आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और ओडिशा में होने वाले विधानसभा चुनावों से जुड़े एग्जिट पोल आयोजित करने, प्रकाशित करने या प्रचारित करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। निषेधाज्ञा की अवधि 19 अप्रैल को सुबह 7 बजे से 1 जून को शाम 6:30 बजे तक होगी। यह प्रतिबंध प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य प्रसार पद्धति सहित सभी प्रकार के मीडिया पर लागू होता है। उपरोक्त आम चुनावों और विधानसभा चुनावों के लिए मतदान प्रक्रिया के समापन तक 48 घंटे की अवधि के दौरान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर जनमत सर्वेक्षणों या किसी अन्य सर्वेक्षण के परिणामों सहित किसी भी चुनाव-संबंधित सामग्री का प्रदर्शन प्रतिबंधित रहेगा।

पीएम मोदी फिर महाराष्ट्र दौरे पर, 1 अप्रैल को मुंबई आएंगे

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर महाराष्ट्र का दौरा करेंगे। बताया गया है कि पीएम मोदी 1 अप्रैल को मुंबई आएंगे और आरबीआई के एक कार्यक्रम में शामिल होंगे. पिछले दो महीने में मोदी का यह महाराष्ट्र का चौथा दौरा है। इससे पहले नरेंद्र मोदी अटल सेतु के उद्घाटन समारोह के लिए मुंबई आए थे. इस मौके पर उन्होंने महाराष्ट्र में 30 हजार करोड़ रुपये के विभिन्न विकास कार्यों का उद्घाटन किया था. उससे पहले मोदी नासिक में राष्ट्रीय युवा महोत्सव में शामिल हुए थे. इसके बाद उन्होंने सोलापुर का भी दौरा किया. लोकसभा चुनाव की घोषणा से पहले 28 फरवरी को प्रधानमंत्री मोदी ने यवतमाल का दौरा किया था. अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर महाराष्ट्र के दौरे पर आ रहे हैं. हालांकि, बताया जा रहा है कि इस बार उनका दौरा राजनीतिक नहीं होगा. भारतीय रिज़र्व बैंक 1 अप्रैल 2024 को अपने 90वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस मौके पर मुंबई के नरीमन पॉइंट स्थित नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी की प्रमुख उपस्थिति रहने वाली है. खबर है कि कार्यक्रम का उद्घाटन मोदी करेंगे.

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

७० हजार वेतनभोगी महिला का बेटा भी पीएसआई की ओर से १० हजार की रिश्वत लेते पकड़ा गया

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत के लालगेट पुलिस चौकी की महिला पीएसआई रिश्वत लेते पकड़ी गई. पीएसआई मंजुला पारगी की ओर से रिश्वत लेने वाले बेटे अश्विन पारगी को एसीबी ने गिरफ्तार कर लिया है. शिकायतकर्ता के व्यवसाय पर काम करने वाले एक तकनीशियन के खिलाफ लालगेट पुलिस स्टेशन में एक आवेदन दर्ज किया गया था। आवेदन पर सीआरपीसी की धारा १५१ के तहत कार्रवाई नहीं करने के लिए पीएसआई द्वारा १०,००० रिश्वत की मांग की गई थी. चूंकि शिकायतकर्ता रिश्वत नहीं देना चाहता था, इसलिए उसने एसीबी को सूचित किया। रिश्वत मांगने वाले पीएसआई को पकड़ने के लिए एसीबी ने जाल बिछाया. लालगेट चौकी की पीएसआई मंजुला पारगी ८ हजार की रिश्वत में एसीबी के जाल में फंस गई हैं। रिश्वत लेने के लिए उसने अपने बेटे को अपने पास रखा। उन्होंने सीआरपीसी की धारा-१५१ के हिरासत संबंधी उपायों का पालन नहीं करने के लिए तकनीशियन से रिश्वत की मांग की। मंजुला की सैलरी ७० हजार है. एसीबी स्टाफ ने मंजुला शंकरलाल पारगी और बेटे अश्विन पारगी के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है.

एसीबी ने बताया कि लालगेट इलाके में एक बिजली ठेकेदार ने एक टेक्नीशियन को नौकरी पर रखा था. उनके खिलाफ एक आवेदन दायर होने के बाद मामले की जांच लालगेट पुलिस स्टेशन की महिला पीएसआई मंजुला पारगी द्वारा की जा रही थी।

भटेना में ट्रक द्वारा बाइक सवार को कुचलने के बाद

हिट एंड रन में १९ वर्षीय युवक की मौत हो गई

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत में आए दिन हादसे बढ़ते जा रहे हैं. तभी भाठेना में हिट एंड रन की घटना सामने आई। भटेना पुल पर एक ट्रक चालक ने बाइक चालक को कुचल दिया। जिससे १९ साल के युवक की मौत हो गई. हादसे के बाद ट्रक चालक भाग गया। युवक के परिजनों ने न्याय और दुर्घटना करने वाले ट्रक चालक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है.

युवक के रिश्तेदार शेख रोशन ने बताया कि मृतक मेरा चचेरा भाई है. पूजा-अर्चना के बाद चाय पीकर वे भटेना के नए पुल से गुजर रहे थे। ये लोग थोड़ी स्पीड में थे. दो ट्रक एक साथ थे. एक ट्रक में ब्रेक लग गया. जिसमें बाइक चालक गिर गया। जिसमें उन्हें काफी चोट आई थी. खून भी खूब बह रहा था. तो वह मर गया.

१९ साल के नवाज खान की मौत हो गई. ट्रक चालक तेज गति से गाड़ी चला रहे थे। उसका एक्सीडेंट हो गया और वह भाग गया।

हादसे को लेकर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई है. शीघ्र न्याय की मांग की गयी है. ट्रक चालक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए।

परिवार ने ७ साल के बेटे के अंग दान किए, लिवर और किडनी से ३ को मिलेगी नई जिंदगी

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत में धुलेटी पर्व पर शाम करीब छह बजे शिवम खस्तिया घर की पहली मंजिल की बालकनी में अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट बॉल खेल रहा था। शिवम, जो पहली मंजिल पर खड़ा था, अपने दोस्त द्वारा फेंकी गई गेंद को पकड़ने की कोशिश में अपना संतुलन खो बैठा और फर्श से जमीन पर गिरकर घायल हो गया। मौके पर मौजूद शिवम के चचेरे भाई उन्हें वलवाड़ा गांव के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में ले गए और बच्चे की स्थिति देखने के बाद उन्हें मरीज को दूसरे अस्पताल में स्थानांतरित करने की सलाह दी।

शिवम का चचेरा भाई अपनी कार में बच्चे को दूसरे अस्पताल ले जाने के लिए निकला, रास्ते में बच्चे की सांसें थम गईं, सुनीताबेन पटेल (पीएचसी-पर्यवेक्षक) ने तुरंत बच्चे को सीपीआर देना शुरू कर दिया और बीच में ही अपने सुजबूज से १०८ पर संपर्क किया और सरदार अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया। बारडोली.किया गया.

इस पूरे घटनाक्रम में चचेरे भाई ने अपने रिश्तेदार डॉक्टर को बुलाया. धूल महोत्सव होने के कारण डॉ. मेघजी घोघरी से संपर्क किया गया। मेघजी घोघरी को घटना के बारे में पहले से पता होगा इसलिए सरदार अस्पताल की टीम को तैयार रखा गया था। उन्हें सूरत स्थित निर्मल चिल्ड्रेन हॉस्पिटल में स्थानांतरित कर दिया गया क्योंकि उन्हें तत्काल सर्जरी की आवश्यकता थी क्योंकि सिटी स्कैन रिपोर्ट में ब्रेन हेमरेज दिखाया गया था।

निर्मल अस्पताल में न्यूरोसर्जन डॉ. उनके मस्तिष्क का ऑपरेशन हितेश चित्रदा ने किया, ४८ घंटे बाद भी शिवम की हालत में सुधार नहीं हुआ, डॉ. निर्मल चोररिया, डॉ. हितेश चित्रदा, डॉ. जिग्नेश वैद्य, डॉ. जिग्नेश पटेल, डॉ. विजय शाह ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया था. मेघजीभाई घोघरी और डॉ. जीवनदीप अंगदान फाउंडेशन ट्रस्ट के पीएम गोंडलिया, हितेश पिक्टोरदा द्वारा डॉ. विपुल ठकिया। नीलेश काछड़िया से संपर्क किया गया. अंगदान के बारे में जानकारी के लिए जीवनदीप अंगदान की पूरी टीम द्वारा परिवार के सदस्यों से मुलाकात की गई और उन्हें अंगदान करने के लिए पर्याप्त समझ दी गई। पिता नीलेशभाई, मां दक्षाबेन, चचेरे भाई विशालभाई, मामा वीरेंद्रभाई, भरतभाई, जगदीशभाई, रमेशभाई, भगवानभाई, प्रेमजीभाई, डॉ. ऐसा सोचा गया था कि मेघजीभाई घोघरी सहित शरीर जलकर पंचमहाभूत में विलीन हो जाएगा, जबकि अंग विफलता के रोगियों को उनके अंग दान करके नया जीवन दिया गया था, पूरे परिवार के सदस्य अंग दान प्रक्रिया से गुजरने के लिए सहमत हुए थे। इस प्रक्रिया के लिए परिवार की सहमति मिलने के बाद गुजरात सरकार के सोटो इंस्टीट्यूट से संपर्क किया गया. पंजीकरण प्रक्रिया सोटो में निर्मल चिल्ड्रेन हॉस्पिटल से शुरू की गई थी। लिवर और दोनों किडनी का दान आईकेडीआरसी अस्पताल के माध्यम से सोटो गुजरात द्वारा स्वीकार किया गया था। अंग दान की पूरी प्रक्रिया को जीवनदीप ऑर्गन डोनेशन फाउंडेशन ट्रस्ट के संस्थापक-पी द्वारा सुविधाजनक बनाया गया था। इस कदर। गोंदलिया, विपुल ठकिया, डॉ. नीलेश काचडिया, अंगदान चैरिटेबल ट्रस्ट के दिलीपदा देशमुख, निर्मल चिल्ड्रन हॉस्पिटल के डॉ. निर्मल चोररिया, डॉ. विजय शाह, डॉ. हितेश चित्रदा, डॉ. जिग्नेश पटेल, डॉ. जिगेश वैद्य, डॉ. अक्षय जयसवाल, डॉ. पूजा तोषनीवाल, डॉ. जरना शाह, जतिन जोशी, सागर सोलंकी, दीक्षित त्रिवेदी, मकरंद जोशी, दीपक जयसवाल, जीवनदीप टीम के कल्पेशभाई बलार, नितिन धमेलिया, चिराग कुकड़िया, बिपिन लेकिया, जसविन कुंजड़िया, हार्दिक खिचड़िया, हर्ष पाठक, उमेश मिश्रा, दीपक डोंगा, आशीष सावलिया , यह सफल अंगदान सूरत से वल्लभभाई चठानी, कमलेश कटारिया एवं समस्त निर्मल हॉस्पिटल स्टाफ परिवार एवं जीवनदीप अंगदान फाउंडेशन ट्रस्ट के समन्वय से किया गया।

ऑर्गन टाइम सर को सूरत से अहमदाबाद तक पहुंचाने के लिए पूरी गुजरात पुलिस द्वारा ग्रीन कॉरिडोर की सख्त व्यवस्था की गई थी। पीएम गोंडलिया और विपुल पोंडिया ने कहा कि अंगदान के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए सभी प्रेस, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, ओटीटी प्लेटफॉर्म और विभिन्न सोशल मीडिया का भरपूर समर्थन मिल रहा है, जिससे संस्था के माध्यम से यह १३वां अंगदान किया गया। दो चींटियों के लीवर और अंग दान से तीन अन्य लोगों को नई जिंदगी मिलेगी।

सूरत डायमंड ब्यूरो को बढ़ावा देने के लिए कोर कमेटी का प्रयास

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

जून से एक साथ शुरू होंगे ५०० से ज्यादा कार्यालय सूरत

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किए गए हीरा बाजार ने कार्यालय नहीं खोले क्योंकि इसके शुरू होते ही विवाद हो गया था। फिर बिल्डिंग के बिल्डर ने भी केस दर्ज कराया है. एक्सचेंज के चेयरमैन के इस्तीफा देने के बाद नई समिति का गठन किया गया है. इसके बाद गोविंद ढोलकिया की अध्यक्षता में नई कोर कमेटी की बैठक हुई. जिसमें जून माह से ५०० से अधिक कार्यालय एक साथ शुरू करने की योजना है।

समिति को एसडीबी में कार्यालय शुरू करने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है। मिनीबाजार, महिधरपुरा और मुंबई के व्यवसायियों के साथ बैठक की जाएगी। कंपनी के लेटर पैड पर ऑफिस शुरू करने की तारीख ली जाएगी। एसडीबी तैयार है लेकिन कार्यालय खुले नहीं हैं. समिति की ओर से इसी समय कार्यालय शुरू करने की योजना बनायी गयी है. इसलिए कार्यालय एक साथ शुरू किए जाएंगे।

समिति की ओर से लालजी भाई पटेल ने कहा कि किसी भी व्यापारी में कोई नाराजगी नहीं है. जिन ४२०० सदस्यों के कार्यालय का फर्नीचर पूरा हो चुका है, उन्हें जून से शुरू कर दिया जाएगा। सभी लोग उत्साहित हैं. तो मिलकर माहौल बनेगा. जल्दबाजी नहीं की जाएगी. उड़ान भी शुरू हो गई है. माहौल अच्छा है. माहौल बनेगा तो काम अच्छे से होगा। बेचने वाले और खरीदने वाले भी आने वाले हैं.

बिजनेसमैन के बेटे को ड्रग्स सप्लाई करने वाला पकड़ा गया

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

पुलिस की ओर से नो ड्रग्स इन सूरत सिटी अभियान के तहत यह अभियान चलाया जा रहा है. ६ दिन पहले अलथाण इलाके से कारोबारी के बेटे के पास से भारी मात्रा में एमडी ड्रग्स जब्त की गई थी. जिसकी जांच में पुलिस द्वारा नशीला पदार्थ देने वाले आरोपियों को पकड़ने के लिए कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इसलिए पुलिस ने ड्रग्स सप्लाई करने वाले आरोपी को हिरासत में ले लिया है और आगे की कार्रवाई कर रही है.

कारोबारी के बेटे को एमडी ड्रग्स सप्लाई करने वाला आरोपी जमीर पकड़ा गया है. अलथाण में एक कारोबारी के बेटे वानावाला को पुलिस ने एमडी ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया था. जांच में पता चला कि बिजनेसमैन का बेटा ड्रग डीलर बन गया है. वह अपने दोस्तों को ड्रग्स सप्लाई करता था. कारोबारी के बेटे को ड्रग्स सप्लाई करने वाले ज़मीर को डीसीपी जोन ४ स्कोड ने गिरफ्तार कर लिया है.

पुलिस ने बताया कि आरोपी जमीर पर पहले भी मारपीट का मामला दर्ज किया गया था. वह कारोबारी के बेटे समेत कई लोगों को ड्रग्स सप्लाई करता था.